विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत 1

सांची के स्तूप
आगरा का किला
फतेहपुर सीकरी
ताजमहल, आगरा

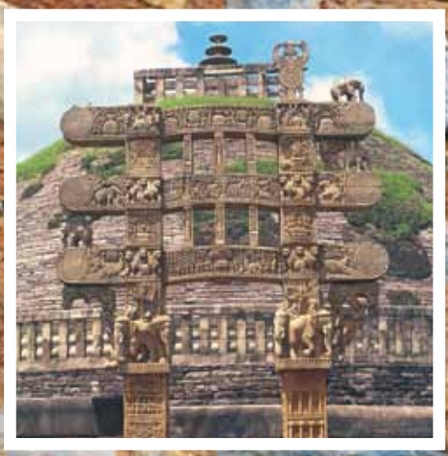

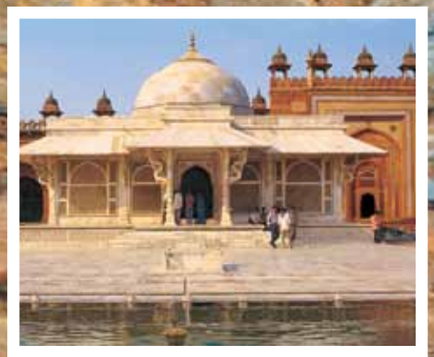

Sanchi Stupas
Agra Fort
Fatehpur Sikri
Taj Mahal, Agra

WORLD CULTURAL HERITAGE SITES - INDIA 1

Booklet

विश्व सांस्कृतिक सम्पदा–भारत

1972 में यूनेस्को की आम सभा ने ''विश्व की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा'' से संबंधित सभा पारित की। इस सभा का उद्देश्य विश्व की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा हेतु विश्व के विभिन्न देशों एवं उनके निवासियों में परस्पर सहयोग को बढ़ावा देना था, ताकि वे इस दिशा में अपना योगदान दे सकें। बहुत से देशों ने इस सभा को समर्थन देकर अपने-अपने देश की सीमाओं में स्थित विशिष्ट सार्वभौमिक महत्व के स्थानों एवं स्मारकों का संरक्षण करने की शपथ ली। सभा ने इस दिशा में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का रचना विधान तथा विश्व धरोहर समिति गठित की।

इस सभा की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह भी थी कि इसने विश्व धरोहर कोष स्थापित किया, जिससे कि विश्व धरोहर में सूचीबद्ध प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक स्थानों के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहायता ली जा सके। विश्व धरोहर कोष में विभिन्न स्रोतों से आर्थिक सहायता मिलती रहती है, जिसे संरक्षण की योजनाओं पर, स्मारकों तथा स्थानों को यथावत् बनाए रखने के कार्यों पर खर्च किया जाता है।

विश्व धरोहर समिति की वर्ष में एक बैठक होती है तथा इसके मुख्य दो कार्य हैं–

– विश्व-धरोहर को पहचानना, अर्थात् उन प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक स्थानों का चयन करना, जो इसके अंग होंगे। इकोमोस (इंटरनेशनल काउन्सिल ऑफ मोन्यूमेंट्स ऐण्ड साइट्स) तथा इयूकन (इंटरनेशनल यूनियन फॉर दि कंजरवेशन ऑफ नेचर ऐण्ड नेचुरल रिसोर्सेज) विभिन्न देशों के प्रस्तावों की जांच-पड़ताल कर उनकी मूल्यांकन रिपोर्ट बनाकर समिति के कार्यों में सहायता करती है।

– विश्व धरोहर कोष के प्रचालन एवं विभिन्न देशों द्वारा मांगी गई तकनीकी एवं वित्तीय सहायता का निर्धारण करना।

यूनेस्को द्वारा भारत में चुने गए विश्व धरोहर स्थान इस प्रकार हैं–अजंता की गुफाएं; एलोरा की गुफाएं; आगरा का किला; ताज महल, आगरा; सूर्य मंदिर, कोणार्क; महाबलिपुरम स्मारक समूह; चर्च एवं कॉन्वेन्ट्स, गोआ; खजुराहो स्मारक समूह; हम्पी के स्मारक; फतेहपुर सीकरी-मुगलकालीन शहर; पट्टदकल स्मारक समूह; एलिफेंटा की गुफाएं; वृहदेश्वर मंदिर, तंजावूर, स्तूप साँची; कुतुब स्मारक समूह तथा हुमायूँ का मकबरा, दिल्ली।

World Cultural Heritage Sites–India

The General Council of UNESCO in 1972 adopted the "Convention concerning the Protection of the World Natural and Cultural Heritage". The aim of the Convention was to promote cooperation among all nations and people in order to contribute effectively to the protection of the natural and cultural heritage which belongs to all mankind. A large group of nations ratified the Convention and pledged to conserve the sites and monuments within its borders which have been recognised as having an exceptional universal value. To this end, the Convention established a mechanism of international cooperation and set up a World Heritage Committee.

Another important achievement of the Convention was the creation of the World Heritage Fund which allows it to call upon international support for the conservation of the natural and cultural sites listed as the World Heritage. The World Heritage Fund receives incomes from different sources which are used to finance conservation projects and upkeep of the monuments and sites.

The World Haritage Committee, which meets once a year, has two important tasks :

— to define the World Heritage, that is, to select the cultural and natural wonders that are to form part of it. The Committee is helped in this task by ICOMOS (International Council of Monuments and Sites) and IUCN (International Union for the Conservation of Nature and Natural Resources) which carefully examine the proposals of the different countries and draw up an evaluation report on each of them.

— to administer the "World Heritage Fund" and to determine the technical and financial aid to be allocated to the countries which have requested for it.

The World Heritage Sites selected by UNESCO in India are: Ajanta Caves; Ellora Caves; Agra Fort; Taj Mahal, Agra; The Sun Temple, Konarak; Mahabalipuram Group of Monuments; Churches and Convents, Goa; Khajuraho Group of Monuments; Hampi Monuments; Fatehpur Sikri-Mughal City; Group of Monuments at Pattadakal; Elephanta Caves; Brihadesvara Temple, Thanjavur, Stupas, Sanchi; Qutub Complex and Humayun's Tomb, Delhi.

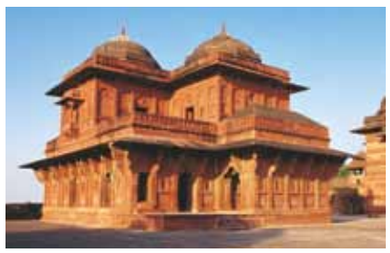

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली का हमेशा यह प्रयास रहा है कि वह लोगों को ''भारतीय संस्कृति'' के बारे में शिक्षित करने के लिए मनमोहक व जानकारी देने वाली पठनीय सामग्री उपलब्ध कराए। ऐसी प्रकाशित सामग्री देश भर के उन स्कूलों में वितरित की जाती है, जहां के अध्यापकों को केन्द्र ने प्रशिक्षण दिया है। इनका उपयोग विभिन्न शैक्षणिक स्थितियों में भारतीय कलात्मक अनुभूति के अन्त: संबंध को समझाने के लिए किया जाता है। इनका उद्देश्य देश की युवा शक्ति को भारतीय कला एवं संस्कृति में निहित दर्शनशास्त्र एवं सौंदर्य के प्रति संवेदनशील बनाना है।

प्राय: छात्रों को संग्रहालयों एवं ऐतिहासिक स्मारकों की शैक्षणिक यात्रा पर जाकर प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने का अवसर नहीं मिलता। ऐसी स्थिति में सांस्कृतिक केन्द्र इस पठनीय सामग्री के द्वारा स्कूल की चारदीवारी के अंदर ही छात्रों को भारतीय विचारधारा तथा कला के वैभव व सौंदर्य का साक्षात् परिचय करवाता है।

केन्द्र द्वारा तैयार की गई दृश्य एवं श्रव्य सामग्री के अतिरिक्त इसकी मुद्रित सामग्री की भी देश भर के अध्यापकों ने काफी प्रशंसा की है। अपने बीच लोकप्रिय इस मुद्रित सामग्री की सहायता से वे छात्रों में हमारी प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संपदा के संरक्षण के प्रति उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करते हैं।

भारत में विश्व धरोहर सप्ताह मनाने के लिए सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र देश में स्थित विश्व धरोहर के 16 स्थानों पर चार सांस्कृतिक पैकेज प्रस्तुत कर रहा है। इनमें से हर पैकेज में 24 रंगीन चित्र हैं। हर चित्र के पीछे उसकी व्यापक जानकारी है। इनके साथ एक पुस्तिका भी है, जिसमें छात्रों एवं अध्यापकों की जानकारी के लिए हर स्मारक का वर्णन तथा संबंधित गतिविधियों का उल्लेख है। यद्यपि इन पैकेजों के 96 रंगीन चित्र इन स्थानों की भव्यता को साकार करने में पूरी तरह सक्षम तो नहीं होंगे, फिर भी एक सीमा तक पुस्तिका छात्रों एवं अध्यापकों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी दे सकेगी।

स्कूल चाहें तो दल या क्लब बनाकर या फिर अन्य स्वैच्छिक संस्थाओं के साथ मिलकर महत्वपूर्ण स्थानों के बारे में व्यापक खोजबीन कर सकते हैं तथा छात्रों को संरक्षण के आसान तरीके सिखा सकते हैं।

सारे देश में फैले हजारों से ज्यादा पुरातन स्मारकों में से कुछ का संरक्षण भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, कुछ स्वैच्छिक संस्थाएं, धर्मार्थ न्यास तथा कुछ व्यक्ति कर रहे हैं। यह एक बहुत गर्व की बात है कि यूनेस्को ने भारत के 16 स्मारकों को चुनकर विश्व की धरोहर-सूची में शामिल किया है। यद्यपि देश के बहुसंख्यक स्मारकों को देखते हुए यह संख्या काफी छोटी है, फिर भी इससे उस काल के कलाकारों एवं वास्तुविदों का सम्मान बढ़ा है जिन्होंने 2000 वर्षों की लंबी अवधि में इन स्मारकों को साकार किया था।

The Centre for Cultural Resources and Training (CCRT)'s New Delhi endeavour has been to produce informative and attractive educational material to teach about Indian Culture. These materials are distributed to schools in all parts of the country from where teachers have been trained by the CCRT. They are used in a variety of teaching situations to create an understanding of the inter-disciplinary approach in Indian artistic manifestations. They aim at sensitising the youth to the philosophy and aesthetics inherent in Indian art and culture. Students do not always get a chance to visit museums and historical monuments to get a first-hand experience of learning about our cultural heritage; hence, the materials of the CCRT bring to the students, in the confinement of the four walls of the classroom, the splendour and beauty in Indian thought and art.

Apart from other audio-visual materials prepared by the CCRT its Folios and Cultural Packages have received wide acclaim and are very popular with teachers in all parts of the country, who are using them to create amongst students a sense of responsibility for conservation of all that is beautiful in our natural and cultural heritage.

To celebrate the World Heritage Week in India the CCRT is presenting four Cultural Packages on the 16 World Heritage Sites in India. These packages contain about 24 pictures each with detailed descriptions of each picture alongwith a booklet giving information about each monument and related activities for students and teachers. The 96 pictures contained in these packages are not adequate to recreate the splendour of these sites. However, within the given constraints, it is hoped that inspired by the activities provided in the booklet, teachers and students will collect more information about their cultural heritage and interweave it into the curriculum subjects that they teach and learn. Schools can also form groups, clubs and work with other voluntary organisations to systematically take up the work of conducting detailed studies of the sites and encourage the youth to learn simple conservation techniques.

Of the thousands of ancient monuments strewn all over the countryside in India, some are protected by the Archaeological Survey of India, a few by voluntary organizations and endowment trusts and some by members of the community at large. It is a matter of great pride that UNESCO has selected 16 monuments of India and placed them on the World Heritage list. Though this number is small in comparison to the large number of monuments in the country, it brings prestige to the artists and architects of India of that bygone era, who made these monuments in a period covering a span of 2000 years.

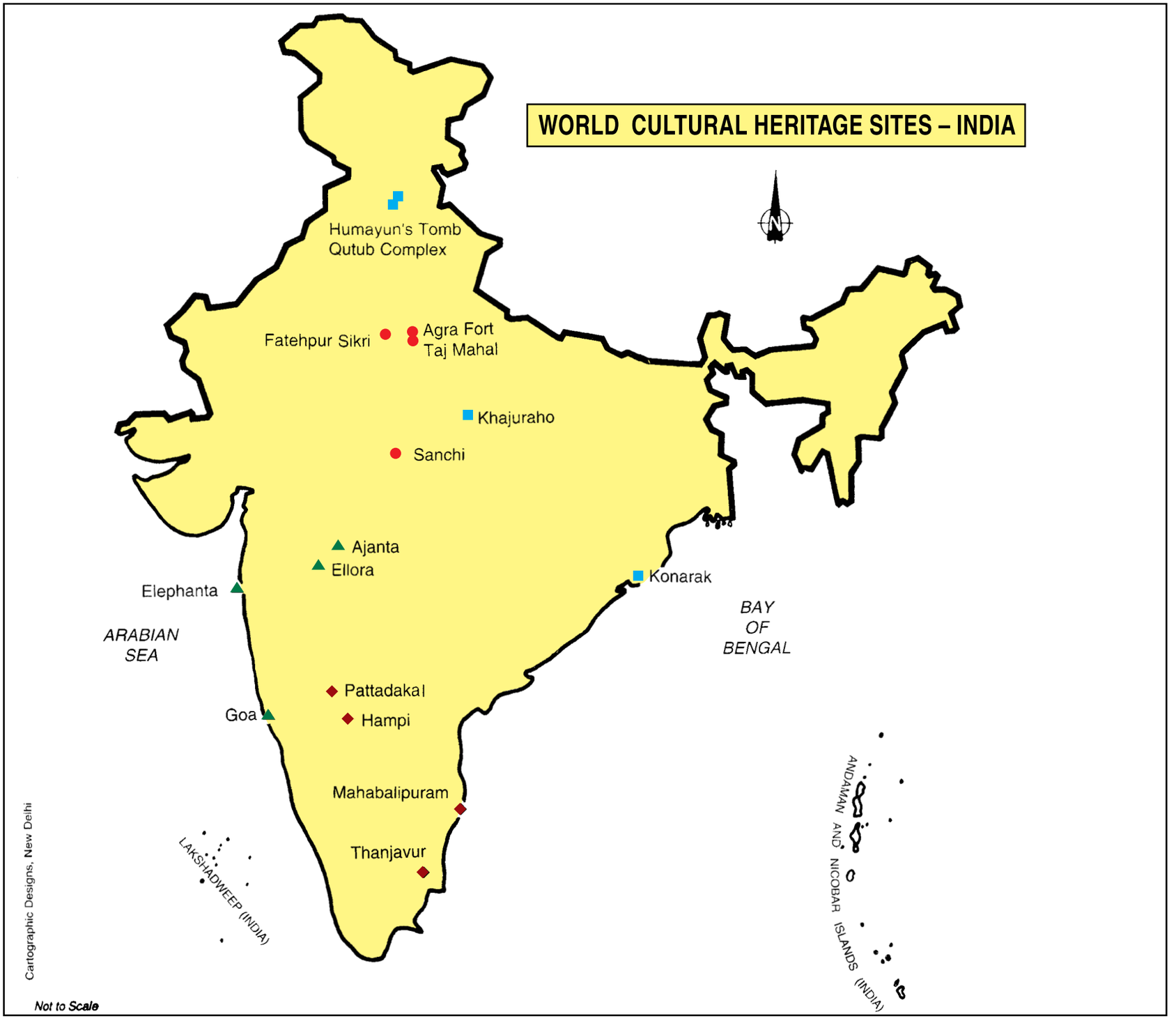

World Cultural Heritage Sites —India 1
Sanchi Stupas, Agra Fort;
Fatehpur Sikri; Taj Mahal, Agra

World Cultural Heritage Sites —India 2
Sun Temple, Konarak; Khajuraho Temples;
Qutub Complex, Humayun's Tomb, Delhi

World Cultural Heritage Sites —India 3
Ajanta Caves; Ellora Caves; Elephanta Caves;
Churches and Convents, Goa

World Cultural Heritage Sites —India 4
Mahabalipuram Monuments; Brihadesvara Temple,
Thanjavur; Pattadakal Temples; Hampi Monuments

सांची

सांची विदिशा की दक्षिणी-पश्चिमी दिशा में वहां से लगभग नौ किलोमीटर दूर स्थित है। विदिशा, पौराणिक आकार (पूर्वी मालवा) की राजधानी थी तथा इसका वर्तमान नाम बेस नगर है।

वर्तमान सांची को विभिन्न कालों में भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता रहा है। इनमें से कुछ नाम हैं–चैत्यगिरी, काकणाय, काकणाव, काकणाड-बोट, बोट-श्री महावीर और बोट-श्री पर्वत। इन सभी नामों का उल्लेख विशाल स्तूपों के प्रवेशद्वार एवं रेलिंगों पर उत्कीर्ण लेखों में मिलता है। लेकिन इस स्थान का नाम सांची कब और कैसे पड़ा, इस बारे में कोई भी जानकारी उपलब्ध नहीं है।

सांची अपने बौद्ध एवं हिन्दू मंदिरों के लिए विख्यात है तथा यह माना जाता है कि मौर्य सम्राट अशोक ने जब यहां स्तूप तथा एकाश्म स्तंभ का निर्माण करवाया था तो उस समय अनेक विशाल धार्मिक भवनों की आधारशिला भी रखवाई थी।

स्तूप वास्तव में एक ठोस अर्धवृत्ताकार टीला होता है तथा उसमें बुद्ध अथवा बौद्ध संतों के पार्थिव अवशेष रखे जाते हैं। स्तूप के शीर्ष भाग पर हर्मिका होती है तथा चारों दिशाओं की तरफ खुलने वाले चार प्रवेशद्वार, तोरण होते हैं जो बड़े सुन्दर ढंग से उत्कीर्ण किए जाते हैं। ये प्रवेशद्वार, स्तूप के शेष भाग से पूर्णत: भिन्न होते हैं। स्तूप का अर्धवृत्ताकार उभार, जो कि पत्थरों से निर्मित होता है, वहीं तोरण-द्वार मूर्तियों द्वारा अत्यलंकृत होते हैं। तोरण के अभिलंब तीन आड़े प्रस्तर-पादों में से निकलकर ''त्रि-रत्न'' के प्रतीक में समाप्त होते हैं।

स्तूप क्रमांक 1 से 3 तक के सभी स्मारकों में उभारदार परिष्कृत तक्षण के खूबसूरत उदाहरण मिलते हैं। कलाकारों ने धार्मिक सीमाओं में रहते हुए भी समकालीन जीवन का विस्तृत चित्रण किया है। यह प्रयास उन प्राचीनतम प्रयत्नों में से एक है जो समकालीन जीवन को उसकी संपूर्णता में चित्रित करने के लिए किए गए थे। सांची की कला महीन रूप से उत्कीर्ण बोधि-वृक्ष, स्तूप, चक्र, आसन, कल्पतरु तथा कल्पलता आदि प्रतीकों से समृद्ध है।

सांची में गुप्त-काल के दौरान मंदिर क्रमांक 17 तथा 18 एवं महात्मा बुद्ध की ध्यान मुद्रा वाली चार मूर्तियां स्थापित की गई थीं। ये ध्यानावस्था वाली मूर्तियाँ प्रवेशद्वार के सम्मुख चबूतरे की दीवार के साथ स्थित हैं।

सांची के 17 व 18 क्रमांक वाले मंदिर, गुप्तकाल के उन प्रारंभिक मंदिरों में से हैं जो अपने संतुलित एवं परिष्कृत रूप के लिए प्रसिद्ध हैं। 19वीं सदी में कनिंघम द्वारा स्थापित पुरातात्विक संग्रहालय में सांची की 14वीं शताब्दी की कला के अवशेषों को देखा जा सकता है। यह संग्रहालय वर्तमान में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अधीन है। 14वीं शताब्दी से लेकर सन् 1818 ईस्वी तक, जबकि कर्नल टेलर ने इन स्तूपों को खोजकर इनके बारे में विस्तृत वर्णन प्रकाशित नहीं करवाया था, सांची तब तक उपेक्षित रहा।

सांची, मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से 45 किलोमीटर दूर रायसीना जिले में स्थित है तथा इसे अपने उल्लेखनीय ऐतिहासिक एवं सुसंरक्षित धार्मिक भवनों के कारण विश्व के मानचित्र में दर्शाया जाता है।

यही कारण है कि हर वर्ष हजारों की संख्या में पर्यटक सांची की तरफ खिंचे चले आते हैं। इनमें आम लोगों के साथ तीर्थयात्री एवं कला व पुरातत्व के विद्यार्थी भी होते हैं।

Sanchi

Sanchi is situated at a distance of about nine kilometres south-west of Vidisha. Vidisha, modern Besnagar, was the capital of the ancient Akara (eastern Malwa).

Present day Sanchi has been known by a variety of names through the ages, such as, Chetyagiri, Kakanaya, Kakanava, Kakanada-Bota, Bota-Sri Mahavihara and Bota-Sri Parvat. These are found in inscriptions on the railings and gateways of the Great Stupa itself. When and how the place came to be known by its modern name “Sanchi” is not known.

It is believed that the Mauryan Emperor Ashok laid the foundation of great religious establishments at Sanchi when he built a *stupa* and erected a monolith pillar. Sanchi is famous for its Buddhist and Hindu shrines.

The *stupa* is a funerary hemispherical solid mound which contains the relics of Buddha or Buddhist saints. The *stupa* is usually crowned by a *Harmika* and has four exquisitely carved gateways facing the north, east, west and south. The entrance gates form a striking contrast to the body of the *stupa.* The hemispherical dome of the *stupa* is composed of stones and the gates are elaborately decorated with sculptures and bas reliefs. The ‘uprights’ of the *torana* coming out of three horizontal architraves terminate in the *‘tri-ratna’* symbol.

All the monuments at Sanchi from Stupa No. 1 to 3, provide the most splendid specimens of elaborate carving in bas relief. Within the religious framework, the artists at Sanchi displayed a panorama of the then contemporary life. It was one of the earliest attempts to represent contemporary life in its entirety. The art of Sanchi is enriched with exquisitely carved symbols and motifs such as the Bodhi-tree, Stupa, Chakra, Asana, Kalpataru and Kalpa-lata.

At Sanchi, temples No. 17 and 18 and four large images of the *Dhyanamudra* Buddha placed along the wall of the plinth facing the gateways stand out as fine examples of the art of that period The temples No. 17 and 18 are one of the earliest Gupta temples noted for their well-balanced proportions and elegance. Some remains up to the 14th century art of Sanchi can be seen in the Archaeological Museum which was established by Cunningham in the late 19th century and is now under the Archaeological Survey of India. From the 14th century, Sanchi remained neglected until, 1818 A.D. when Colonel Taylor discovered these *stupas* and published a detailed account of these buildings.

Sanchi is in Raisena district about 45 kilometres from Bhopal, the capital of Madhya Pradesh, and figures on the international map for its historicity and remarkably well-preserved religious structures. Sanchi attracts thousands of visitors including pilgrims, students of art and archaeology and tourists every year.

आगरा का किला

किले बनाने के इतिहास को अगर देखा जाए तो पता चलेगा कि भारत में किलेबंदी का कार्य प्राचीन समय से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक होता रहा है। इसी के साथ-साथ किलेबंदी ने भारत में कई साम्राज्यों के बनने-बिगड़ने में एक निर्णायक भूमिका अदा की।

ये किले युद्ध-काल में सुरक्षा प्रदान करने के साथ-साथ अपने वास्तुकारों एवं कारीगरों के अलावा अपने शासक की बुद्धिमानी एवं कल्पना शक्ति का भी परिचय देते हैं।

आगरा के प्राचीनतम इतिहास की छवि अत्यंत अस्पष्ट है, पर आज यह नगर अपने अभूतपूर्व मुगल-स्मारकों के लिए संपूर्ण विश्व में जाना जाता है। मुगलों से पूर्व यह सिकंदर लोधी की राजधानी था तथा सिकंदर लोधी के पुत्र इब्राहिम लोधी को बाबर ने सन् 1526 की पानीपत की प्रथम लड़ाई में पराजित किया था। मुगल वंश के तीसरे बादशाह, अकबर ने यहां सन् 1564-65 में इस शाही किले की आधारशिला रखी थी। उस समय उनकी उम्र केवल तेईस वर्ष की थी। इस विशाल किले की बाहरी दीवार लगभग 70 फीट ऊंची है। इस पर मीनारें, प्राचीर, झरोखे एवं छज्जे बने हैं। यह किला यमुना नदी के दाहिने तट के समानान्तर बना हुआ है। इसके चारों तरफ गहरी और चौड़ी खाई है।

इसमें बहुकोणीय स्तंभ, दीवारगीर का आधार बने स्तंभों के शीर्ष, अलंकरण के लिए उत्कीर्ण करने का ढंग तथा किले की आंतरिक दीवारों और छतों पर चित्रित डिजाइन देखे जा सकते हैं।

इस विशाल घेरेबंदी के बीच यह वास्तुकला की उत्तम संरचना है।

अकबर के इतिहासकार एवं आईना-ए-अकबरी के लेखक अबुल फज़ल ने इसके चार दरवाजों का उल्लेख किया है। लेकिन आज किले के दो दरवाजे ही हैं—पहला अमर सिंह दरवाजा। यह इस किले का मुख्य प्रवेशद्वार है तथा मूलत: यह अकबरी दरवाजा कहा जाता था। दूसरा दरवाजा हाथी स्तंभ या हाथी दरवाजा है इसे यह नाम इसलिए मिला क्योंकि काफी पहले इसके समीप हाथियों की आकृति को तराशा गया था। इनके अलावा दर्शनी दरवाजे और यमुना नदी की तरफ के एक दूसरे दरवाजे का ही उल्लेख अबुल फज़ल ने किया होगा।

किले के अंदर के भवनों में केवल अकबर के समय में बल्कि उसके उत्तराधिकारी शासकों-जहांगीर एवं शाहजहां के काल में भी काफ़ी फेर-बदल हुआ। परिणाम स्वरूप आज जिन्हें हम देखते हैं, उनमें अकबर की मूल वास्तुरचना व सजावट का लेशमात्र ही है।

दीवान-ए-आम दोहरे स्तंभों वाला दीवान-ए-खास, एकांत में बना अंगूरी बाग, दौलतखाना-ए-खास, मुसम्मन बुर्ज, खास महल, हमाम, आईना-महल, शाहजहां की मोती मस्जिद तथा औरंगजेब द्वारा बनाई गई नगीना मस्जिद इसके खास आकर्षण के केन्द्र हैं।

Agra Fort

The history of fortification in India dates back from ancient times to the early nineteenth century. Forts have played a dominant role in shaping the destiny of many a kingdom throughout India. These forts, apart from their purpose of security during war times, also display the genius, skills and imagination of architects, craftsmen and emperors of the period.

The history of the ancient city of Agra is shrouded in obscurity. The city today is famous throughout the world for its superb Mughal monuments. Before the Mughals, it was the capital of Sikandar Lodi. His son Ibrahim Lodi was defeated by Babar in 1526 A.D. in the first battle of Panipat.

Akbar, the third of the Mughal emperors laid the foundation of the majestic fort in Agra in 1564-65 A.D. when he was just 23 years old. The fort is huge, and its high massive walls around seventy feet high, are crowned with turrets, battlements, windows and balconies. The fort stands parallel to the right side of the Yamuna River. The outer wall of the fort is surrounded by a deep and wide moat. The many sided pillar shafts, the capitals of the pillar forming bracket supports, carved or boldly inlaid patterns for ornamentation, painted designs on the interior walls and ceilings can be seen in this fortress palace of Agra. Within this vast enclosure are exquisite architectural creations.

Akbar's biographer Abul Fazal writes that the fort is provided with four gates. However, the fort has two entrance gates today, the Amar Singh Gate, being used as the main entrance and originally named as Akbari Gate, and the Hathi Pole or Elephant Gate, so called because of the life-like carvings of elephants that it once had. The Darshani Gate and the gate which overlooks the river might have been the two other gates mentioned by historians.

The buildings inside the fort underwent many changes, particularly during the reign of Akbar's two immediate successors—Jahangir and Shahjahan. Today very little is left of the original architectural and decorative styles of Akbar.

The Diwan-i-Am, the beautiful double-pillared Diwan-i-Khas, the Jasmine Tower, the Khas Mahal, recessed Angoori Bagh, the Hamam, the Shish Mahal or Palace of Mirrors, Shahjahan's Moti Masjid and Aurangzeb's Nagina Masjid are some of the attractions of this building which need to be studied in greater detail.

फतेहपुर सीकरी

भारत में बादशाह बाबर से शुरू होने वाला मुगल-काल वास्तव में कलात्मक उपलब्धियों का वह जमाना था, जब कलाओं के विभिन्न पहलू फूले-फले। बादशाह अकबर ने आगरा के पश्चिम में 37 किलोमीटर दूर इस फतेहपुर सीकरी को बसाते हुए अपनी राजधानी बनाया था। ऊपरी विंध्याचल पर्वतमालाओं की एक श्रेणी पर स्थित इस शहर का निर्माण 16वीं शताब्दी में पन्द्रह वर्षों में हुआ था तथा इस शहर में भी अकबर ने अपने नव-रत्नों को एकत्रित किया था। उसने धर्म, मत तथा सामाजिक स्तर को महत्व न देते हुए ऊंचे कलाकारों, विद्वानों और दार्शनिकों का चुनाव किया था।

इनमें से कुछ के नाम तो इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में अंकित हैं। रिज के ऊपरी सिरे पर महल परिसर स्थित है तथा रिज के निचले सिरे पर फतेहपुर सीकरी व उसवे समकालीन गांव स्थित हैं।

सूफी संत शेख सलीम चिश्ती की दुआओं से अकबर के यहां तीन लड़के पैदा हुए थे। इस उपकार के बदले में अकबर ने सूफी संत शेख सलीम चिश्ती के सम्मान में अपनी नई राजधानी फतेहपुर सीकरी का निर्माण करवाया।

अकबर ने अपने रचनात्मक जीवन का अधिकांश समय फतेहपुर सीकरी में शेख सलीम चिश्ती के एकांत आश्रम के नजदीक गुजारा था। इस शहर का मूल नाम सीकरी था तथा 1572 की गुजरात विजय के पश्चात् इसके पहले फतेहपुर जोड़ा गया, जिसका अर्थ है 'विजय का नगर'। शहर की वास्तु निर्माण कला एक संयोजित परिसर के पौर-डिजाइन के विशिष्ट आदर्शों को दर्शाती है।

इसके प्रांगण परस्पर जुड़े हैं। खारी नदी से शहर को पेय जल प्राप्त होता था। चूंकि बादशाह अकबर संगीत का प्रश्रयदाता था तथा तानसेन जैसा महान संगीतकार उनका राजकीय संगीतकार था, इस कारण दीवान-ए-खास और पंच महल के इर्द-गिर्द का स्थान संगीत-सभाओं के लिए आदर्श वातावरण मुहैया कराता था। शहर के चारों तरफ की लंबी दीवार में लाल दरवाजा, दिल्ली दरवाजा, बीरबल दरवाजा, ग्वालियर दरवाजा, तेहरा दरवाजा, चोर दरवाजा तथा अजमेरी दरवाजा आदि नाम वाले अनेक दरवाजे थे।

आज फतेहपुर सीकरी में आगरा दरवाजे में से होकर प्रवेश किया जाता है तथा दीवान-ए-आम, पांच मंजिलों वाले पंच महल, जामी मस्जिद परिसर, बुलंद दरवाजा, जोधाबाई का किला, बीरबल का घर, दीवान-ए-खास, महल-ए-खास तथा सूफी संत शेख सलीम चिश्ती की मजार इसके महत्वपूर्ण व प्रसिद्ध भवन हैं। सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्मारक जामी मस्जिद को मक्का की पवित्र मस्जिद के हू-ब-हू बनाया गया। इसका ज्यादातर निर्माण लाल-पत्थरों से हुआ है।

आज फतेहपुर सीकरी भारत का एक ऐसा पुरातात्विक स्थान है जो मुगल-काल के गौरवशाली हिस्से को दर्शाता है।

Fatehpur Sikri

The Mughal rule in India, starting from the time of Emperor Babar was an era of great artistic achievements. Emperor Akbar built his capital at Fatehpur Sikri, which is 23 miles (37 kms.) west of Agra. The city, which stands on a ridge of the upper Vindhya mountains, was constructed in a record time of 15 years in the 16th century. The palace complex is situated on top of the ridge whereas the contemporary villages of Fatehpur, Sikri and Nagar are located at the bottom of this ridge. In this city, Akbar assembled his *nav-ratnas,* the nine jewels. He chose artists, scholars, philosophers of great repute, irrespective of their religious beliefs or social status.

With the blessings of the Sufi Saint Sheikh Salim Chisti, three sons were born to Akbar. In gratitude, Akbar resolved to build a new capital city in honour of the Sheikh.

Akbar spent his most formative years near the hermitage of the saint at Fatehpur Sikri. The name Fatehpur, meaning city of Victory, was added to the original Sikri after the conquest of Gujarat in 1572 A.D. The architecture of the city shows outstanding principles of civic design for an integrated complex. The courtyards are interlinked. The Khari River supplied water to the city.

The long wall around the city has many entrances: the Lal Gate, the Delhi Gate, the Birbal Gate, the Gwalior Gate, the Terha Gate, the Chor Gate and the Ajmer Gate.

Today, Fatehpur Sikri is entered through the Agra Gate. The cloistered Diwan-i-Am (Hall of public audience), the Panch Mahal, a five storeyed pavillion, the Jami Masjid complex, the Buland Darwaza, the Jodh Bai's Palace, the Birbal's House, the Diwan-i-Khas, the Mahal-i-Khas and the Tomb of the Sheikh Salim Chisti are the important and popular buildings of the complex. However, the most important monument is the Jami Masjid-the mosque-said to be modelled after the one at Mecca.

Most of the constructions at Fatehpur Sikri are built entirely of red sandstone. Today, the city of Fatehpur Sikri is one of the important archaeological sites and displays a glorious phase of Mughal history.

ताजमहल

ताजमहल, संपूर्ण विश्व द्वारा सम्मानित एक आश्चर्य है तथा यह भारत में शताब्दियों पश्चात् विकसित वास्तुकला एवं कला के परमोत्कर्ष रूप को दर्शाता है।

ताज ने शाहजहां की चहेती बेगम अर्जुमंद बानो के नाम को सारे विश्व में अमर कर दिया है। उनका लोकप्रिय नाम 'मुमताज महल'' है। यह एक आम धारणा है कि मुमताज को अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था, इसी कारण उन्होंने अपने जीते-जी शाहजहां से कसम ले ली थी कि वह उसकी याद में एक ऐसा मकबरा बनवाएंगे, जो उसके नाम को अमर कर देगा। 28 जून, सन् 1631 को मुमताज का इंतकाल हो गया। शाहजहां ने दुबारा शादी नहीं की और उसकी याद में आगरा में यह भव्य स्मारक बनवाया।

शाहजहां ने मज़ार के अपने दिवास्वप्न को साकार बनाने के लिए न केवल भारत अपितु पड़ोसी इस्लामी देशों की प्रतिभाओं को आमंत्रित किया। लाहौर के उस्ताद अहमद ने प्रमुख वास्तुकार तथा बगदाद के उस्ताद मोहम्मद हमीद ने मुख्य राजगीर की भूमिका निभाई। इन्हीं दोनों कारीगरों ने बाद में दिल्ली का लाल किला बनाने में भी बादशाह की मदद की थी।

यमुना नदी के किनारे पर स्थित इस मज़ार की, संगमरमर के चबूतरे पर निर्मित, चार मीनारें हैं। इस आयताकार बाग में स्थित मक़बरे का पहला उद्देश्य रौज़ा को पूरा करना था। इसे 'उर्स' अर्थात् तीर्थस्थान भी माना जाता है तथा यह बारादरी, यानी उत्सव कक्ष के रूप में भी इस्तेमाल होता था।

ताजमहल के प्रवेश-द्वार आकर्षक हैं तथा इनसे शुरू होकर एक अक्षीय नहर संगमरमर के बने ऊंचे चबूतरे पर निर्मित जलकुण्ड तक जाती है। इस जलकुण्ड का नाम हौज-ए-केसर है।

मक़बरे के सम्मुख संगमरमर का ही बना विचरण-स्थल है। इसे बड़ी ही खूबसूरती से बनाया गया है। वृक्षों की कतार तथा फूलों की सतह इसके आकर्षण को और भी बढ़ा देती है। यह मकबरा आकार में वर्गाकार है। इसकी हर दिशा 57 मीटर (186 फीट) लंबी है।

ताजमहल के मुख्य मकबरे के मध्य में स्मारक है तथा उसके चारों तरफ बेहतरीन कारीगरी की अष्टकोणीय जाली है। इसकी एक मेहराब पर यह उक्ति अंकित है-''स्वर्ग के बगीचे में पाक-दिलों का स्वागत है।''

मगर, आज ताज के अस्तित्व को एक अदृश्य खतरे, प्रदूषण से खतरा पैदा हो गया है। भारत सरकार इस महान कलात्मक एवं ऐतिहासिक महत्व के स्मारक को सुरक्षित रखने के लिए कटिबद्ध है और हर सम्भव प्रयत्न कर रही है।

Taj Mahal

The Taj Mahal is one of the world's acknowledged wonders. It represents the culmination of the art of architecture and decoration which had developed in India over the centuries.

The Taj has immortalised the name of Arjumand Bano Begum, emperor Shahjahan's beloved wife, popularly known as Mumtaz Mahal, 'the light of the palace'. It is commonly believed that the queen had a premonition of her death and she made Shahjahan promise that he would build, in her memory a beautiful tomb that would immortalise her. She died on June 28, 1631. Shahjahan never remarried and he built the most celebrated mausoleum for her at Agra.

Shahjahan invited the finest talent in India and from its neighbouring Islamic countries for execution of his dream. Ustad Ahmad of Lahore was the chief architect and Ustad Mohammad Hamid of Baghdad was the master mason. These two artists later also helped the emperor to build the Red Fort at Delhi.

The mausoleum has four flanking minarets set on a marble platform overlooking the Yamuna river. The mausoleum, in the first place, served the purpose of a *Rauza*-a tomb set in a rectangular garden. It is considered as an *Urs,* a place of pilgrimage and also served the purpose of Baradari or festal hall.

The gateways are splendid, and an axial water channel goes to an elevated marble pool known as *Hauz-i-Kauser,* from the gateways. The long promenade made out of marble set in front of the mausoleum is beautifully executed and the rows of cypress trees and flower beds add charm and colour to this monument. The mausoleum is square in shape, 186 ft (57 metres) on each side.

In the centre of the main mausoleum lies the cenotaphs, which are surrounded by an octagonal screen of superb craftsmanship.

A quotation from the Quran on an arch "invites the pure of heart to enter the Gardens of Paradise".

Today the Taj itself is threatened by an invisible danger, the pollution in the area caused by a number of factors. The Government of India is making all efforts to preserve this monument which is of great aesthetic and historical importance.

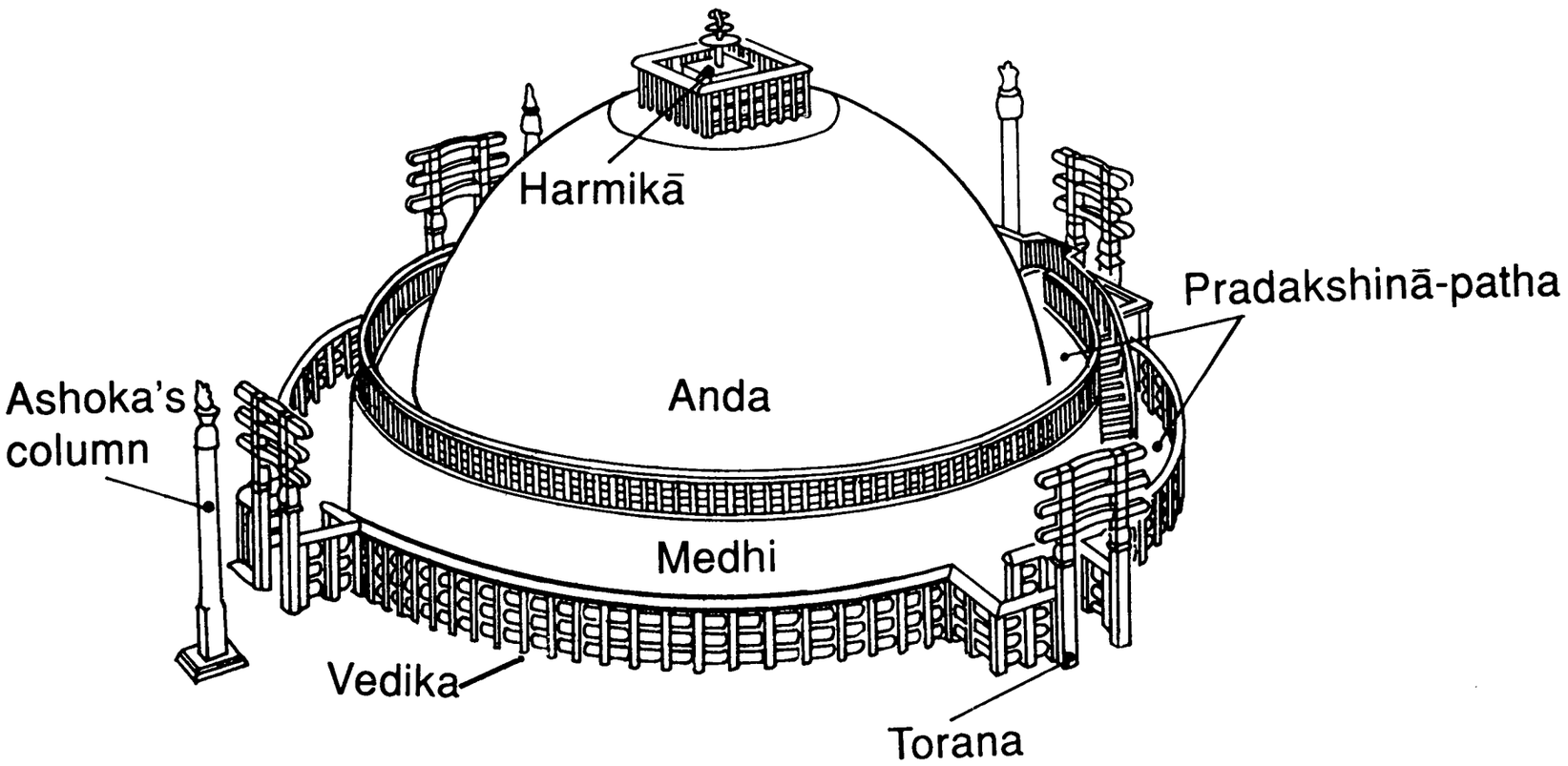

PLAN OF STUPA

तोरण
Torana

तोरण मूलत: प्रवेशद्वार होता है। इसके दो ऊर्ध्वाकार स्तंभों पर तीन आड़े प्रस्तरपाद आधारित रहते हैं। इन स्तंभों के बीच से निकल कर श्रद्धालुगण स्तूप में प्रवेश करते हैं। इसके दोनों तरफ वन्य एवं वनस्पति जगत के सजावटी प्रतीक उत्कीर्ण किए जाते हैं। साथ ही भवन-निर्माण की बारीकियां भी होती हैं।

The *Torana* is basically a gateway. It consists of two upright pillars supporting three architraves that makes an entry space through which the devotee gains an access to the *stupa.* Both its sides are carved with the decorative motifs of figures, animals, plant life and architectural details.

हर्मिका
Harmika

स्तूप के अंडभाग के शीर्ष की चौकोर रेलिंग (घेरे) को हर्मिका कहते हैं। यह स्तूप के एक महत्वपूर्ण भाग यष्टि को घेरे रहती है।

The square superstructure in the form of a railing on top of the dome of *stupa* is known as *Harmika.* It encloses the pole *Yasti,* an important part of the *stupa.*

प्रदक्षिणा-पथ
Pradakshina patha

मंदिर या पूजा स्थल के चारों तरफ बने सामान्य सतह से ऊंचे पथ को प्रदक्षिणा-पथ कहते हैं। श्रद्धालुगण इस पथ पर घड़ी के अनुरूप बाईं दिशा से प्रदक्षिणा प्रारंभ करते हैं।

A path used for clockwise circumambulation surrounding an image, shrine or building is known as *Pradakshina patha.*

मेधि
Medhi

स्तूप के चारों तरफ के ऊंचे उठे पथ (पटरी) को मेधि कहते हैं। इसे स्तूप की प्रदक्षिणा के लिए उपयोग में लाया जाता है।

The berm of a *stupa* is known as *Medhi.* The berm *(medhi)* level of the *stupa* is used for circumambulation.

वेदिका
Vedika

पवित्रस्थल या वस्तु की पवित्रता बनाए रखने हेतु उसके चारों ओर निर्मित सतह से ज़रा ऊंचे घेरे या रेलिंग को वेदिका कहते हैं।

A railing or fence protecting a sacred structure or a spot or object of veneration is known as *Vedika.*

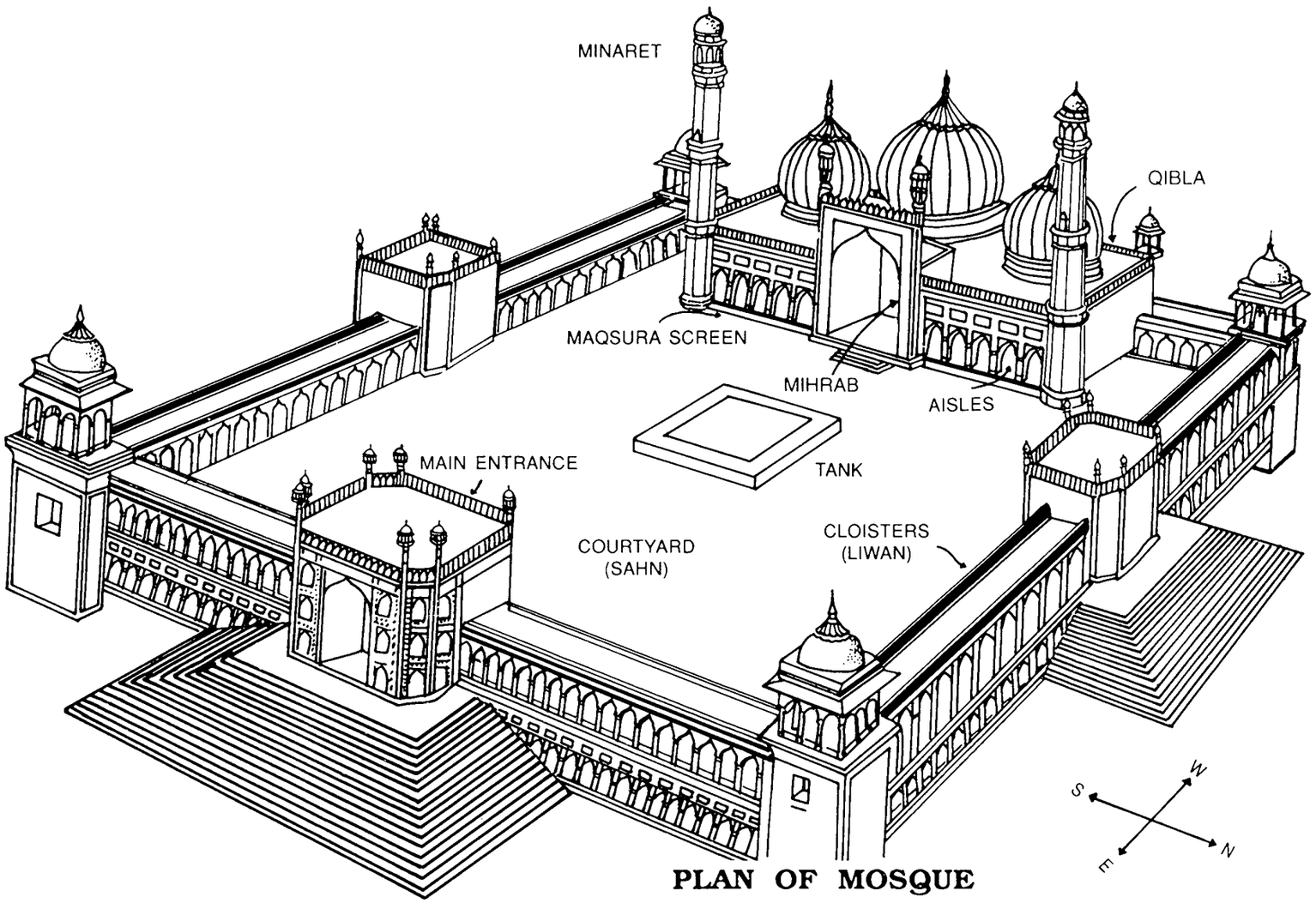

PLAN OF MOSQUE

किबला
Qibla

मस्जिद या प्रार्थना-स्थल की काबा (मक्का) की तरफ की दीवार को किबला कहते हैं। इसी कारण क्षेत्र विशेष की भौगोलिक स्थिति की वजह से किबला की दिशा हमेशा एक-दूसरे से अलग रहती है।

Qibla is the wall of the mosque or prayer hall oriented towards the Kaaba of Mecca. It is, therefore, varying in direction according to the geographical region.

मेहराब
Mihrab

मेहराब, किबला दीवार में बने आले को कहते हैं। प्रायः यह आदमकद होता है और मक्का की सही दिशा दिखाता है।

Mihrab is a niche or alcove, usually the height of a man. It is set into the *qibla* wall of a prayer hall and indicates the precise direction of Mecca.

मक़्सुरा
Maqsura

मस्ज़िद के किबला के आखिरी सिरे को मक़्सुरा कहते हैं। रेलिंग के मार्फत यह हिस्सा अलग रहता है तथा इसका उपयोग केवल शाही व्यक्ति या मौलवी ही कर सकता है।

Maqsura is a railed off area at the qibla (wall) end of a mosque. It is reserved for the chiefs of the community or rulers.

लिवान
Liwan

लिवान मस्जिद का स्तंभों वाला कमरा होता है।

The pillared cloister of a mosque is known as *Liwan.*

सहन
Sahn

मस्ज़िद के आँगन की खुली जगह को सहन कहते हैं। यहीं पर सभी लोग नमाज पढ़ने के लिए इकट्ठे होते हैं।

Sahn is the courtyard of a mosque where the faithful assemble for prayers.

शिखर
Shikhara

सामान्यतया, मंदिर शब्द सुनते ही हमारे समक्ष गर्भ-गृह की चोटी पर बनी ऊंची अधि-रचना आ जाती है। 'शिखर' का शाब्दिक अर्थ 'पर्वत की चोटी' है, जो विशेष रूप से भारतीय मंदिर की अधि-रचना का पर्याय है।

विद्वानों का मत है कि 'शिखर' का अर्थ 'सिर' है और इसे 'शिखा' शब्द से ग्रहण किया गया है, जिसका अर्थ सिर के पीछे एक रूढ़िवादी हिन्दू द्वारा रखे जाने वाला बालों का गुच्छा है।

Generally, the accepted form of the temple is the high superstructure built on top of the *garbha-griha.*

Shikhara which means 'mountain peak' is the superstructure of the Indian temple. Scholars mention that the *Shikhara* meaning 'head' has been derived from '*Shikha*', the tuft of hair worn by an orthodox Hindu on the crown of the head.

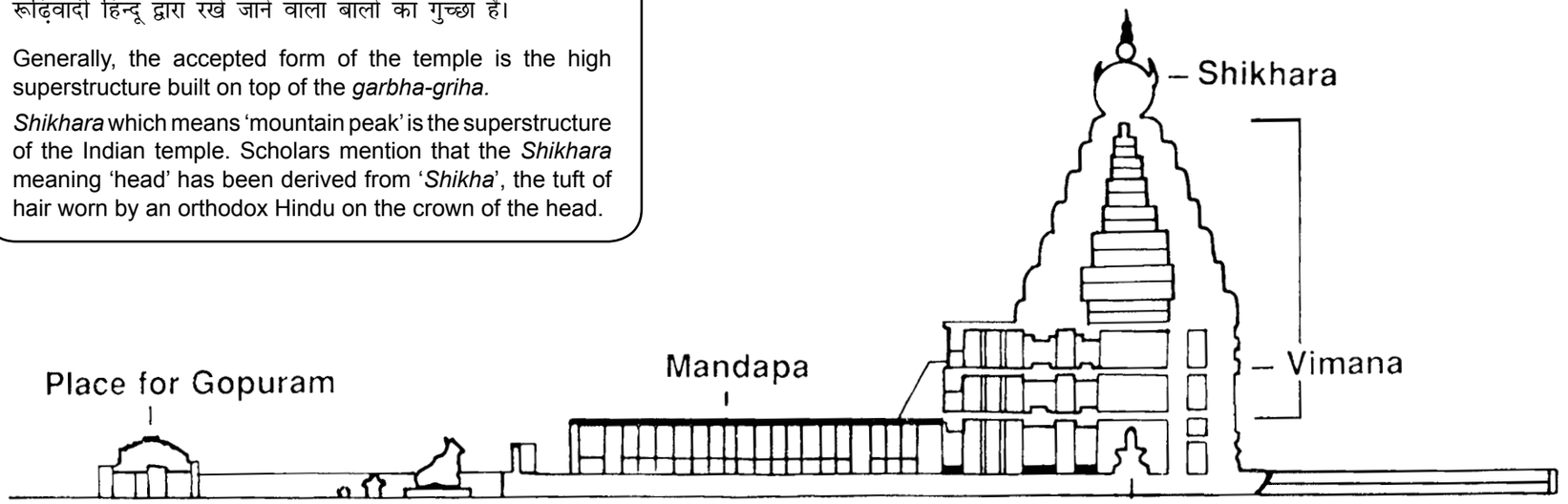

PLAN OF TEMPLE

विमान
Vimana

यह संरचना मूलत: स्थल-योजना में चौकोर अथवा आयताकार होती है और यह पिरामिडीय ढांचे की तरह ऊपर को कम होता जाता है। इसे कई मंजिलों तक ऊंचा बनाया जाता है।

'शास्त्रों के अनुसार' विमान विविध आनुपातिक परिणामों के साथ निर्मित मंदिर का नाम है।

This is a structure which is basically square or rectangular in ground plane. It rises several storeys high and is pyramidal in shape.

Vimana is the name of the temple built according to the proportionate measurements laid down in the *shastras.*

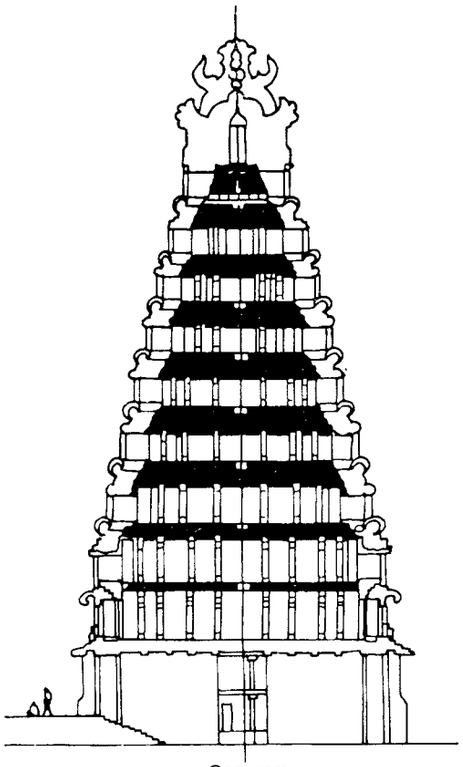

Gopuram

गर्भ-गृह
Garbha-Griha

गर्भ-गृह, निश्चित रूप से एक गहरा अंधेरा कक्ष होता है, जहां मंदिर की प्रमुख देवी को स्थापित किया जाता है। यह कक्ष वास्तुकला योजना में चौकोर अथवा कभी-कभी आयताकार होता है और कभी-कभी बहुभुजी अथवा गोलाकार होता है।

अपने नाम के अनुसार यह इमारत 'गर्भ' की भाँति मानी जाती है तथा अनन्त काल से गर्भ-गृह का यह स्वरूप अपरिवर्तित है। नाम तथा रूप से भी गर्भ-गृह प्राथमिक महत्व का स्थान है। यह वह स्थान है जहाँ भक्तगण अपने सांसारिक विचारों को थोड़ी देर के लिए भूल कर ईश्वर से समागम करते हैं।

The *Garbha-Griha* is essentially a small dark chamber where the main deity of the temple is established. It is square in plan or very rarely rectangular or polygonal or circular.

It is believed to be the "womb" and has remained unchanged throughout the ages. By its name and form, the *garbha-griha* is a place of primary significance. This is the place towards which the devotee proceeds momentarily leaving behind all worldly thoughts to be in communion with the supreme being.

गोपुरम्
Gopuram

'गोपुरम्' दक्षिण भारतीय मंदिरों का प्रवेश-द्वार है। गोपुरम् शब्द का उद्भव वैदिक काल के ग्रामों के गो-द्वार से हुआ और धीरे-धीरे यही गो-द्वार मंदिरों के विशाल प्रवेश द्वार बन गये, जिन्हें यात्रीगण बहुत दूर से भी देख सकते थे।

'गोपुरम्' की भवन-योजना आयताकार होती है। गोपुरम् की पिरामिडीय बनावट को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए इसकी सबसे नीचे की दो मंज़िलें ऊँचाई में बराबर बनाई जाती हैं।

Gopuram is a South Indian temple gateway. *Gopuram* derived its name from the 'cow-gate' of the villages of vedic period and subsequently became the monumental entrance gate to the temple and can be seen from a distance.

The *gopuram* is oblong in plan. The two lowermost storeys are vertical in order to give a stable foundation for the pyramidal structure of the *gopuram.*

मंडप
Mandapa

'मंडप' सामान्यत: एक स्तंभयुक्त सभागृह अथवा ड्योढ़ी (द्वार मंडप) होता है, जहाँ पर भक्तगण मंदिर की देवी, देव अथवा ईश्वरीय प्रतीक को अपना भक्ति-भाव समर्पित करने से पहले एकत्रित होते हैं।

'मंडप' को सीधे गर्भ-गृह से भी जोड़ा जाता है। इस मंडप को पूर्ण रूप से या इसका कुछ भाग बंद किया जा सकता है अथवा मंडप को बिना दीवारों के भी बनाया जा सकता है।

कुछ मंदिरों में, उदाहरणार्थ-महाबलीपुरम में, समुद्र तट पर स्थित मंदिर के मंडप तथा कांचीपुरम् स्थित कैलाशनाथ मंदिर में मंडप मुख्य तीर्थमंदिर से अलग बने हुए हैं।

Mandapa is usually a pillared hall or a porch-like area where devotees assemble before moving into the sanctum sanctorum of the temple.

A *mandapa* may be attached to the *garbha-griha* directly. The structure may be entirely or partially enclosed or without walls.

In some temples like the Shore Temple at Mahabalipuram and the Kailasanatha temple, the *mandapa* is separate from the main shrine.

विश्व सांस्कृतिक सम्पदा–भारत

विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियां

इस पैकेज में दिए गए 24 रंगीन चित्रों को आप कक्षा या स्कूल के किसी महत्वपूर्ण स्थान पर प्रदर्शित कर सकते हैं। इन चित्रों को आप गत्ते पर लगा कर इनका शीर्षक तथा चित्र के पीछे दिया गया मुख्य विवरण नीचे स्थानीय भाषा में भी लिख सकते हैं। भारतीय कला के शैक्षणिक महत्व को उजागर करने के लिए आप इन चित्रों की गहराई में जाकर उन विषयों के साथ अध्ययन कर सकते हैं, जो इनसे संबंधित हों।

अध्यापकगण भी नीचे सुझाई गई गतिविधियों में छात्रों को सम्मिलित कर चित्रों पर कार्य कर सकते हैं। इससे छात्रों की ज्ञान वृद्धि के साथ-साथ उनका मनोरंजन भी होगा।

केवल बाहरी रेखाओं वाले भारत के बड़े आकार के मानचित्र को लें। उसमें महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थानों एवं शहरों को अंकित करें। विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत 1, 2, 3 एवं 4 में दिए गए चित्रों में दर्शाए भवनों के स्थान को पहचानें।

भारत में चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाओं का अध्ययन करें तथा अजंता एवं एलोरा को ध्यान में रखते हुए उन लोगों के बारे में जानकारी एकत्रित करें, जिन्होंने इनका निर्माण किया था। इन गुफाओं के निर्माण-काल तथा इनके उद्देश्य का भी पता लगाएं। इन्हीं से संबंधित निम्नलिखित विषयों के बारे में भी जानकारी एकत्रित करें–

- जलवायु
- प्रकृति-नदी, पेड़-पौधे तथा पक्षी
- गुफाओं के आसपास रहने वाले लोग तथा उनका व्यवसाय आदि।
- उस काल के संगीत, नृत्य, नाटक, शिल्प आदि।
- गुफाओं में दर्शाए गए देवी-देवता, पौराणिक कथाएं, त्यौहार, रीति-रिवाज।

सांस्कृतिक पैकेज में दिए गए भवनों एवं मूर्तियों के चित्रों को देख कर इनके रेखा-चित्र बनाएं।

इन पैकेजों में वर्णित भवनों एवं स्मारकों को देश के प्राचीन तथा मध्यकालीन प्राचीन एवं मध्यकाल के यात्रियों/इतिहासकारों ने इन पैकेज़ों में दर्ज़ भवनों एवं स्मारकों को देखा तथा वे लोग इनसे संबंधित वृत्तांतों तथा संस्मरणों को लिखकर छोड़ गए हैं। इन वृत्तांतों एवं संस्मरणों को एकत्रित कर उनमें वर्णित इन स्थानों का शैलीगत वर्णन तथा स्थानों के नाम के उच्चारण को समझिए।

अपने स्कूल या घर का भू-चित्र बनाकर उसमें खिड़की, दरवाजों तथा स्तंभों की स्थिति दर्शाइए।

धार्मिक स्वरूप को समझना

सभी धर्मों का एक ही उद्देश्य होता है कि लोग बेहतर एवं संपूर्ण जीवन जिएँ। इन सभी धर्मों का बाह्य रूप, जैसे कि कर्मकांड तथा प्रथाएँ, प्रायः ऐतिहासिक, आर्थिक, राजनैतिक और यहां तक कि भौगोलिक कारणों से एक-दूसरे से भिन्नता रखता है।

कई धार्मिक रीति-रिवाज एवं समारोह कृषि से जुड़े होते हैं तथा वे जीवन के आनंद को व्यक्त करते हैं। प्रायः हर काल के अपने धार्मिक विश्वासों ने

World Cultural Heritage Sites–India

Creative Activities for School Students and Teachers

The 24 pictures provided in this package can be displayed in the classroom or at any prominent place in the school. The pictures may be stuck on card-board with the title and description in the regional language. They can also be studied in depth with activities that bring out the educational value of Indian art. The teachers can work with a few pictures at a time ensuring students' enjoyment in learning by involving them in some activities suggested below:

On a large outline map of India, mark important historical sites and places. Find the location of buildings given in the pictures in the World Cultural Heritage Sites—India, 1, 2, 3, and 4

Make a study of the rock-cut caves in India and collect information of the people who built these caves with special reference to Ajanta and Ellora caves. Find out the dates of these caves and for the purpose they were used. Collect the following information:

— Climate
— Nature–rivers, plants, animals and birds
— People living around the caves, their occupation, etc.
— Music, dance, drama, crafts, etc. of the period
— Customs, festivals, myths, gods & goddesses depicted in these caves.

Make a sketch/rough outline of the buildings/sculptures from the pictures provided in the Cultural Packages.

The buildings/monuments mentioned in these packages were visited by a number of travellers/historians in ancient and medieval periods of Indian history and these travellers have left a vivid and interesting account of these buildings/monuments. Collect such travelogues/memoirs. Notice interesting details in these travelogues, such as the style of descriptions, pronunciations of places and the surrounding areas of monuments of that period.

Make a simple ground plan of your school, home or college and show windows, doors and pillars.

Understanding religious concepts

All religions aim at helping us to lead better and richer lives. The outward manifestations of religion such as rituals, customs differ from one another for historical, economic, political and even geographical reasons. Many religious rituals and ceremonies are linked with the annual agriculture cycle and the celebration of life. Religious beliefs have influenced the architects, sculptors, and painters of the by-gone era to create beautiful monuments using specific symbols and motifs pertaining to each religion.

Invite your students to study the religions and people of India and collect information on each religion such as Hinduism, Buddhism, Christianity, Islam, Jainism, Sikhism and others.

— Choose pictures from the World Cultural Heritage Sites in India—1, 2, 3 and 4 of religious monuments, sculptures and paintings and write descriptions;

अपने युग के वास्तुकारों, मूर्तिकारों एवं चित्रकारों को प्रभावित किया है। इसी कारण कारीगरों ने उस धर्म से संबंधित विशेष प्रतीकों का इस्तेमाल करते हुए सुंदर स्मारकों की रचना की है।

अध्यापकगण अपने छात्रों को भारत के लोगों एवं उनके विभिन्न धर्मों का अध्ययन करने को कहें। साथ ही उनसे हिंदू, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम, जैन तथा सिख आदि हर धर्म के बारे में जानकारी जुटाने के लिए भी कहें।

– विश्व सांस्कृतिक संपदा-भारत के 1, 2, 3, एवं 4 में से धार्मिक स्मारकों, मूर्तियों एवं रंगचित्र का चुनाव करें और हुलिया लिखें।

– हर मत के दर्शन को प्रकट करने वाली उक्तियों, लेखों का संग्रह करें।

– प्रत्येक धर्म की प्रार्थना से जुड़े अनुष्ठान के चित्रों को एकत्रित करें।

– हर जाति के महत्वपूर्ण संतों, कवियों, अध्यापकों तथा प्रख्यात व्यक्तियों के बारे में कहानियां और लेख लिखें।

– किसी एक धर्म, उदाहरणार्थ ईसाई धर्म को लें तथा

: ईसा मसीह

: सेन्ट जेवियर

: मदर टेरेसा

का जीवन वृत्तांत लिखें।

या

: भगवान शिव, महिषासुरमर्दिनी, भगवान बुद्ध तथा महावीर के बारे में कहानियां लिखें।

: त्यागराज, तुलसीदास, मीराबाई

या

: पैगम्बर मोहम्मद, शेख सलीम चिश्ती के बारे में लिखें।

– विभिन्न स्मारकों का निरीक्षण कर भवन के फर्श, उत्थापन योजना तथा सजावट का अध्ययन करें।

त्यौहार एवं लोग

– सभी धर्मों के वर्ष भर मनाए जाने वाले त्यौहारों का एक कैलेंडर बनाएं। यह भी बताएं कि वे किस प्रकार मनाए जाते हैं। इस कैलेंडर में–

: तिथि, मास

: त्यौहार से संबंधित कथा या मिथक

: मनाने का कारण

: त्यौहार से संबंधित गतिविधियां, जैसे कि अनुष्ठान, परिधान, खाद्य-पदार्थ, गीत, नृत्य आदि हों।

– विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत के 1, 2, 3 एवं 4 में से चित्रों को प्रदर्शित कर अधोलिखित विषयों को क्रमवार चित्रित करें–

: शिला खंडों को तराशकर की गई वास्तुकला

: हिंदू मंदिर

: इस्लामी स्मारक

— Collect quotations which contain the essence of the philosophy of each faith;

— Collect pictures of rituals connected to prayer of each religion;

— Write stories of important saints, poets, teachers and important members of each community;

— Collect symbols associated with different religions and find their meaning and significance.

— Take one religion such as Christianity and write about the life of :

: Jesus Christ

: St. Xavier

: Mother Teresa

or

— : Stories about Siva, Mahisasuramardini, Lord Buddha, Lord Mahavira

or

: Thyagaraja, Tulsidas, Mira Bai

or

: Prophet Mohammad, Sheikh Salim Chisti

— Visit various monuments and study the floor and elevation plans and decorations of the building.

Festivals and People

— Make an annual calendar of festivals of all religions and describe how each one is celebrated, the calendar may include:

: Date, month

: Story or myth related to the festival

: Reason or purpose of celebration

: Activities connected with festival which may include customs, costume, food, songs, dances, etc.

— Exhibit pictures provided in the World Cultural Heritage Sites—India, 1, 2, 3 and 4 to illustrate the following themes in chronological sequences:

: Rock-cut architecture

: Hindu temples

: Stupas

: Islamic monuments

: Churches and Convents

: बौद्ध मंदिर

: चर्च एवं कॉन्वेन्ट्स

सुलेख एवं चित्रण

किसी मनपसंद कविता को चुन कर उसे कोरे कागज के मध्य में लिखें। आपने स्मारकों या हस्तलिखित पुस्तकों में सुलेख को सजावटी प्रतीक के तौर पर इस्तेमाल किया हुआ देखा होगा। जो कविता आपने कागज के मध्य में लिखी थी, उसके चारों तरफ पारंपरिक डिज़ाइन व सजावटी प्रतीकों का उपयोग करते हुए बार्डर बनाएं।

अधोलिखित विषयों पर निबंध लिखें–

: अजंता की गुफाओं के आसपास रहने वालों का जीवन।

: मेरा मनपसंद शहर।

: मैंने एलोरा के मंदिर-निर्माण में कैसे सहायता की?

: स्मारकों से विहीन विश्व!

: संपूर्ण विश्व में आपसी समझ एवं प्यार को बढ़ाने में स्मारकों की भूमिका।

भारत के राष्ट्रीय पशु, पक्षी, पुष्प के बारे में कविता, निबंध लिखें या उनका चित्र बनाएं। राष्ट्रीय प्रतीक वाली वस्तुओं जैसे कि मुद्रा तथा डाक-टिकटों आदि का संग्रह करें।

भगवान बुद्ध तथा अकबर जैसे महान व्यक्तियों के जीवन से संबंधित ऐसी कहानियां लिखें जो सादगी एवं सच्चाई, जीवन तथा प्रकृति को सम्मान देने के महत्व को दर्शाती हों।

भगवान बुद्ध, अकबर तथा राजराजा (प्रथम) आदि के बारे में नाटक लिखकर उनका मंचन करें।

विभिन्न संतों के चित्रों तथा उक्तियों का संग्रह करें।

प्रकृति तथा उसके कला पर प्रभाव विषय पर प्रश्नोत्तरी आयोजित करें। पूछे जाने वाले प्रश्न, प्रकृति व कला के विभिन्न रूपों जैसे मूर्तिकला, चित्रकला, नृत्य, संगीत आदि पर होने चाहिए।

अधोलिखित विषयों पर आप वाद-विवाद एवं भाषण प्रतियोगिताएं भी आयोजित कर सकते हैं–

: भारत की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संपदा को क्षति पहुंचाकर विकास का कार्य नहीं होना चाहिए।

: विज्ञान व प्रौद्योगिकी के नाम पर क्या मानव को प्रकृति के साथ खिलवाड़ करना चाहिए?

: क्या हमारे स्रोत हमेशा के लिए खत्म हो जाएंगे?

: हम जो प्रकृति से लेते हैं, क्या उसे वापस करते हैं?

भारत के विभिन्न प्रांतों के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, कला व सामाजिक कार्यों के क्षेत्र में प्रसिद्ध भारतीयों के बारे में कहानियां तथा लेख लिखें।

Calligraphy and Illustrations

Choose any poem that you like and write it neatly in the centre of a clean new page. You may have seen calligraphy on monuments as decorative motifs or in hand-written manuscripts. Try and make a beautiful border around the poem that you have written using traditional designs and decorative motifs.

Write an essay on the following topics in your best handwriting.

: Life of the people living around the Ajanta Caves

: The City I like best today

: I helped to build the Kailasanatha temple at Ellora

Write your views on how the world would be without these beautiful monuments.

Indicate the role these monuments play in enhancing love and understanding.

Write poems, essays or paint pictures of India's national animal, bird, flower and collect items which have the national emblem such as currency notes, stamps, etc.

Write stories of the life of Lord Buddha and Lord Mahavira which teach us values such as respect for nature, life, simplicity and truth.

Write and enact dramas on the lives of Lord Buddha, Lord Mahavira, Akbar, Rajraja I.

Conduct quiz competitions on nature in general and influence of nature on art. These quiz competitions should cover all aspects of nature and all the arts such as sculpture, painting, dance, music, etc.

Conduct debate competitions on some topics such as:

: Development should not be at the cost of losing our natural and cultural heritage;

: In the name of science and technology—should man interfere with nature's master plan?

: Will our resources last forever?

: Do we give back to nature what we receive from it?

Write stories of famous Indians in the field of science and technology, art and social sciences.

Illustrated Cards

विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत
World Cultural Heritage Sites-India
1

1. स्तूप नं. 1, साँची, मध्य प्रदेश

एक प्रकार से देखा जाए तो साँची का नाम प्राचीन काल में बने धार्मिक स्थलों व बौद्ध स्तूपों का पर्यायवाची बन गया है। स्तूप एक ठोस अर्द्धवृत्ताकार भवन को कहते हैं, जिसमें बुद्ध, बौद्ध भिक्षुओं व अध्यापकों के अस्थि-अवशेष संगृहीत रहते हैं। स्तूप नं. 1 को उसके ऐतिहासिक महत्व एवं विशाल आकार को देखते हुए ''महान स्तूप'' कहा जाता है। इसके अर्द्धवृत्ताकार गुंबद पर मुकुट के रूप में तिहरी छत्रावली सुशोभित है। इसका व्यास 33.60 मीटर है।

कहा जाता है कि तृतीय शती ईसा पूर्व में अशोक के शासनकाल में इस स्तूप का निर्माण हुआ। बाद में शुंग-वंश के राजाओं ने इसका पुनर्निर्माण व विकास का कार्य किया। तत्पश्चात् गुप्त-काल में भी इसका विस्तार हुआ।

स्तूप की चारों दिशाओं में खुलने वाले चार तोरण हैं और उन पर बौद्ध प्रकरण सूक्ष्म रूप से उत्कीर्ण किए गए हैं।

1. Stupa No. 1, Sanchi, Madhya Pradesh

The name of Sanchi is synonymous with the prominent religious shrines and Buddhist *stupas* which were built in ancient times. The *stupa* is an hemispherical solid building containing some relics of Buddha or Buddhist saints and teachers. The Stupa No. 1 is also known as the Great Stupa' because of its historical importance and size. It has an hemispherical dome *(anda)* which is crowned by a triple umbrella *(chhatravali)* and is 36.60 metres in diameter.

This *stupa* is said to have been built at the time of Ashok, the Mauryan king, in the 3rd century B.C. and renovated and enlarged by the Sunga kings. Later, during the Gupta period, additions were made in this *stupa.* The *stupa* has four exquisitely carved gateways facing north, east, west and south.

2. स्तूप नं. 1, पूर्वी तोरण, साँची, मध्य प्रदेश

इस चित्र में स्तूप नं. 1 के पूर्वी तोरण को नज़दीक से दिखाया गया है। इस के दोनों चौकोर स्तंभों के शीर्ष पर चार हाथियों का समूह है, जो ऐसा लगता है कि अपने ऊपर आधारित तिहरी समतल एवं महीन रूप से उत्कीर्ण शिल्प-पट्टिकाओं को सहारा दे रहा हो। इसके आख़िरी हिस्से को ध्यान से देखिए। इसकी महीन रूप से उत्कीर्ण शिल्प-पट्टिकाएं ऐसा आभास देती हैं, मानों वे किसी पांडुलिपि का एक खुला हुआ पृष्ठ हों, जो प्रायः गोल लपेटी जाती थीं। स्तूप का हर द्वार लगभग 8.53 मीटर ऊंचा है।

द्वार पर उत्कीर्ण शिल्पों में जातक-कथाओं, गौतम बुद्ध के जीवन एवं मानुषी बुद्धों से संबंधित घटनाओं को दर्शाया गया है।

साँची की बौद्ध कला में ''शालभंजिका'' एक महत्वपूर्ण प्रतीक है। साँची की शालभंजिकाएं मनोहर स्त्री-आकृतियां हैं, जो कि इस तोरण में वास्तुकला के उद्देश्य को भी पूरा करती हैं।

यह तथ्य प्रमाणित हो चुका है कि विदिशा के हस्ती-दंत पर नक्काशी करने वालों ने भी इस स्तूप के दक्षिणी द्वार पर नक्काशी की थी।

2. Stupa No. 1, East Torana, Sanchi, Madhya Pradesh

This picture shows the eastern gateway which consists of two square pillars on which, one sees, a set of four elephants supporting a structure of three curviform architraves or horizontal reliefs. Notice the ends which have carved spirals giving the impression of an open leaf of a manuscript, which normally was rolled or folded and tied at the ends. Each *torana* is about 8.53 metres in height.

The scenes from *Jatakas,* scenes from the life of Gautam Buddha, scenes relating to the Manushi Buddhas, etc., are the themes of the carvings on the gateway.

In Buddhist art at Sanchi, *Salabhanjika* is an important sculptural motif. *Salabhanjikas* are graceful female forms which also serve an architectural purpose in this gateway.

It has been established that the ivory carvers of Vidisha were involved in the carving of the Southern gateway of this stupa.

3. भगवान बुद्ध का जीवन-चक्र, स्तूप सं. 1, साँची, मध्य प्रदेश

स्तूप और सम्बद्ध इमारतें, स्मारक के रूप में भगवान बुद्ध के जीवन और उपदेशों तथा महान बौद्ध शिक्षकों का गुणगान करती हैं, साथ ही ब्रह्माण्ड के गोलाकार स्वरूपों की एक रूपरेखा प्रस्तुत करती हैं। पाषाण-निर्मित द्वारमार्ग आधारभूत दिशाओं की ओर निर्देशित करते हैं और उन पर भगवान बुद्ध के जीवन के दृश्यों तथा बौद्धवाद से जुड़े अभिप्रायों जैसे–चक्र, स्तंभ, बोधि-वृक्ष, पद-चिह्न तथा त्रिशूल आदि को प्रचुरता से उत्कीर्ण किया गया है।

प्रस्तुत चित्र में, हम दक्षिण द्वारमार्ग के पश्चिमी स्तंभ के ऊपरी भाग को देख सकते हैं। स्तंभ के शीर्ष पर विधि-चक्र, धर्म-चक्र स्थित है और एक राजसी परिवार के सदस्य धर्मचक्र को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। नीचे के भाग में, रथ पर सपत्नीक सवार एक राजा को दिखाया गया है। द्वारमार्गों पर बनी मूर्तिकलाएँ उस काल के रीति-रिवाजों, वेशभूषाओं और धार्मिक क्रियाकलापों की जानकारी देती हैं।

3. Episodes from Buddha's Life, Stupa No. 1, Sanchi, Madhya Pradesh

The *stupa* and its allied buildings serve as a monument to commemorate the life and teaching of the Buddha and the great Buddhist teachers. The stone gateways mark the cardinal directions and are profusely carved with scenes from the life of the Buddha and motifs associated with Buddhism - the wheel, column, bodhi tree, footprints and the trident.

In this picture, one sees the top portion of the west pillar of the southern gateway. The *Dharmachakra,* the wheel signifying moral codes of conduct, crowns a column. Members of a royal family are seen paying homage to the *Dharmachakra.* In the lower panel, a king accompanied by his wife on a chariot is shown. The sculptures on the gateways provide information on the customs, costumes and rituals of that period.

4. स्तूप नं. 2, साँची, मध्य प्रदेश

यह स्तूप अपने आकार में स्तूप नं. 3 से काफी मेल खाता है। पहाड़ की ढलान पर लगभग 320 मीटर नीचे बने एक बनावटी चबूतरे पर निर्मित इस स्तूप के अण्ड भाग पर न तो कोई छत्रावली है और न ही उसके बाहर कोई तोरण-द्वार। इसकी वेदिका पर अंकित अभिलेखों से ज्ञात होता है कि इसका निर्माण द्वितीय शती ईसा-पूर्व में हुआ।

इसके सुसंरक्षित चबूतरे में अंग्रेजी वर्ण 'एल' के आकार के प्रवेश स्थान हैं। वेदिकाओं पर उत्कीर्ण बौद्ध प्रतीक, जैसे बोधिवृक्ष, राज-सिंहासन, न्याय का चक्र, स्तूप आदि सादगी, आकर्षण और सौंदर्य को साक्षात् करते हैं। भूमिस्थ वेदिकाओं को बड़े ही महीन तरीके से उत्कीर्ण किया गया है।

स्तूप में बौद्ध-शिक्षकों एवं भिक्षुओं के अस्थि-अवशेष हैं। यह एक आम धारणा है कि स्तूप के निर्माताओं ने जानबूझ कर इन अस्थि-अवशेषों को निचले हिस्से पर स्थापित किया था, क्योंकि भगवान बुद्ध को समर्पित स्तूप नं. 1 के समानांतर अस्थि-अवशेषों को स्थापित करने में वे हिचकिचा रहे थे।

4. Stupa No. 2, Sanchi, Madhya Pradesh

This *stupa* resembles Stupa No. 3 in respect of its size. As per the palaeography inscribed on the balustrade, the *stupa* was built in the 2nd century B.C. on an artificial terrace, about 320 metres down the slope of the hill.

The building has neither gateways *(toranas)* nor umbrellas *(chhatravali)* on top of the hemispherical dome *(anda).*

It has a well preserved and decorated ground balustrade with four L shaped entrances. Its double stairways face east. Many of the Buddhist symbols like the bodhi tree, a throne, the wheel of law, the *stupa,* have been chiselled on the railings and have a charm of simplicity and decorative beauty. The sculptural carvings on the ground railing pillars are executed in very low and flat relief.

The *stupa* contains the relics of a few Buddhist teachers. It is commonly believed, that the builders of this *stupa* deliberately chose this lower spot for its location as they hesitated to enshrine the relics adjacent to the *stupa* dedicated to the great Buddha.

5. स्तूप नं. 3, साँची, मध्य प्रदेश

बौद्ध धर्म में स्तूप, भगवान बुद्ध का प्रतीक भी माना जाता है। यह मान्यता है कि इसकी तीन वेदिकाओं में से प्रथम भूमिस्थ वेदिका पृथ्वी की, मेधि अंतरिक्ष की तथा हर्मिका स्वर्ग की प्रतीक है। साँची स्थित स्तूप नं 1 एवं नं 2 की भाँति स्तूप नं 3 में हर्मिका एवं छत्रावली नहीं है। इस स्तूप के अण्ड-भाग का पुनर्निर्माण हुआ था और इस पर एक ही छत्रावली है, जिस पर भगवान बुद्ध के प्रमुख शिष्यों सारिपुतस और महामोगलनस के अस्थि-अवशेष संगृहीत हैं।

इस स्तूप की भूमिस्थ वेदिकाओं के साथ-साथ अन्य वेदिकाओं की मंजूषाएँ भी समकालीन जीवन की विविध झांकियाँ दर्शाती हैं। इनसे उस काल की जीवन-शैली के अध्ययन में काफी सहायता मिलती है।

साँची की मूर्तिकला के अवशेषों को साँची में ही स्थित संग्रहालय में सुरक्षित रखा गया है।

5. Stupa No. 3, Sanchi, Madhya Pradesh

In Buddhism, the *stupa* also symbolises the Lord Buddha. It has three railings—the one on the ground symbolises the Earth, the middle (medhi) railings symbolises the Space and the *harmika* symbolises the Heavens. Unlike Stupa No. 1 and No. 2., Stupa No. 3 at Sanchi has a dome without *harmika* and *chhatravali.* This dome has been rebuilt and has only one *chhatravali* containing the relics of Sariputasa and Mahamogalanasa, the foremost disciples of Buddha.

The ground rail pillars of the Stupa No. 3 alongwith others depicts a panorama of the then contemporary life which helps in studying the life style of that period. Some of the sculptural remains of Sanchi are preserved at the site museum.

6. अमर सिंह दरवाजा, आगरा का किला, आगरा, उत्तर प्रदेश

अपने पूर्वजों-तैमूर और उलग बेग आदि की भांति अकबर भी महत्वपूर्ण भवन-निर्माता था। अकबर ने सन् 1565 में, जब वह मात्र तेईस वर्ष का था, एक भव्य किले का निर्माण शुरू करवाया। इस किले के निर्माण में लाल बलुवा पत्थर इस्तेमाल किया गया। किले एवं उसके अंदरूनी भवनों की योजना हिन्दू और इस्लामी भवन-निर्माण-कलाओं का अद्‌भुत मिश्रण है। किले के चार दरवाज़े हैं, पर आजकल दो दरवाज़े ही इस्तेमाल किए जाते हैं।

इस चित्र में किले के प्रवेश-द्वार को दर्शाया गया है। इसे आजकल अमरसिंह दरवाज़ा कहते हैं। पहले इसे अकबरी दरवाज़ा कहा जाता था। इसमें दो विशाल अष्टकोणीय मीनारें हैं और ये मीनारें तोरण-पथ द्वारा परस्पर जुड़ी हुई हैं।

6. Amar Singh Gate, Agra Fort, Agra, Uttar Pradesh

Akbar, like his ancestors Timur and Ulugh Beg was a compulsive builder. In 1565 A.D., when Akbar was only twenty-three years old, he started construction of the majestic fort built out of red sandstone. The architecture of the fort and the buildings inside show a beautiful blend of Hindu and Islamic architecture.

The walls of the fort are about 21 metres high and the circumference is about 2.4 km. The fort has four gates but only two are open now.

In this picture, one sees the main entrance of the fort now called Amar Singh Gate. This gate was earlier known as Akbari Gate. It consists of two broad octagonal towers joined by an archway.

7. जहाँगीरी महल, आगरा का किला, आगरा, उत्तर प्रदेश

अकबर के दरबार के समकालीन इतिहासकारों–जैसे अबुल फज़ल ने किले के निर्माण से संबंधित बातों का रोचक विवरण लिखा है। इस बात का भी दावा किया जाता है कि किले में विभिन्न प्रकार के पाँच-सौ भवन थे। यह एक अतिशयोक्ति भी हो सकती है लेकिन तथाकथित इन पाँच सौ भवनों में से केवल जहाँगीरी महल, जो कि किले के मुख्यद्वार की ओर अभिमुख है, को छोड़कर कुछ भी शेष नहीं बचा।

जहाँगीरी महल लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है तथा सजावटी डिजाइनों में लाल बलुआ पत्थर के साथ सफेद संगमरमर का उपयोग बड़ी ही समझदारी से किया गया है। यही इसकी विशेषता है।

महल के अंदर एक केंद्रीय प्रांगण है। आधार देने वाले दीवारगीर और स्तंभों आदि पर भरपूर अलंकृत नक्काशी की गयी है। इस महल की बनावट व सजावट, ग्वालियर में राजपूत शासकों द्वारा पन्द्रहवीं शताब्दी के अंत में निर्मित मन मंदिर महल से काफी समानता रखती है।

7. Jahangiri Mahal, Agra Fort, Agra, Uttar Pradesh

Contemporary historians at Akbar's court like Abul Fazal have given a vivid account of the construction of the fort. It is claimed that there were 500 different buildings in the fort. It may be an exaggeration but nothing remains of the 500 or so buildings except the Jahangiri Mahal facing the main gate.

The building is made out of red sandstone. The judicious use of white marble for decorative design is its distinctive feature. Inside this building is a central courtyard, supporting the bracket capitals which are richly carved and ornamented with pendants.

The design and decoration of this building is quite similar to that of Man Mandir palace built at Gwalior by Rajput rulers towards the end of the fifteenth century.

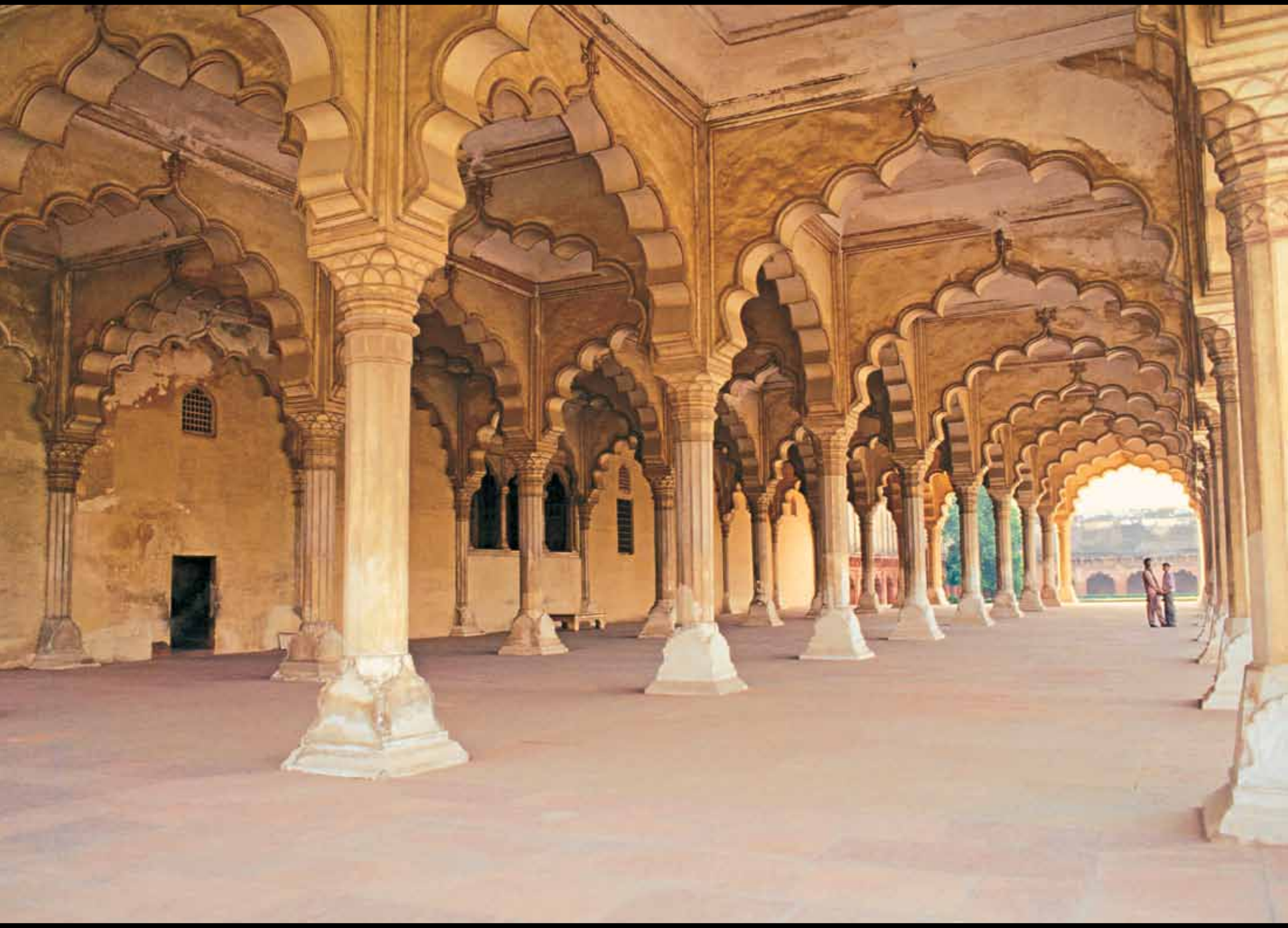

8. दीवान-ए-आम, आगरा का किला, आगरा, उत्तर प्रदेश

दीवान-ए-आम या आम जनता की फरियादें सुनने का भवन, किले के उन भवनों में से एक है, जो पहले-पहल बनकर तैयार हुए। यह इमारत लाल बलुवा पत्थरों से निर्मित है तथा लाल बलुवा पत्थर से ही निर्मित स्तंभों पर अर्द्ध-चंद्र या मोर पंखी मेहराबों को निर्मित किया गया है।

प्रवेश-द्वार के सामने वाली पिछली दीवार के आले पर भरपूर नक्काशी की गई है और संगमरमर का काम किया हुआ है। यह अकबर की वही गद्दी थी, जिस पर बैठकर वह जनता की फरियाद सुना करते थे।

त्यौहारों व विशेष अवसरों पर दीवान-ए-आम को सुनहरी ज़री और रेशमी गलीचों से सजाया जाता था। अकबर के पोते शाहजहां ने इस भवन में मरम्मत सम्बन्धी सुधार-कार्य किए।

उन्नीसवीं शताब्दी में इमारत में चूने का पलस्तर करवा दिया गया।

8. Diwan-i-Am, Agra Fort, Agra, Uttar Pradesh

Diwan-i-Am or Hall of Public Audience is one of the earliest buildings completed in the fort. It is built out of red sandstone and consists of three aisles of nine bays. The building is open on three sides. The peacock arches and columns are built in red sandstone.

The back wall, facing the entrance has a richly carved alcove with inlay marble work. This was Akbar's seat from where he gave daily audience. On festivals and special occasions, the Diwan-i-Am was decorated with gold brocades and silk carpets.

Shahjahan, Akbar's grandson carried out repairs in this building. In the 19th century the building was given a coat of lime.

9. खास महल मंडप, आगरे का किला, आगरा, उत्तर प्रदेश

आगरा के किले में स्थित खास महल के पार्श्व में दो मंडप हैं। इन मंडपों की छतें बंगाल में पाई जाने वाली झोंपड़ियों के समान हैं। पालकी के अभिकल्प के आधार पर निर्मित इन मंडपों की छतें सोना-चढ़ी तांबे की पट्टिकाओं से आच्छादित थीं। इनका महिला-शयनागारों के रूप में प्रयोग किया जाता था, जिनकी दीवारों में गहरे सूराख होते थे। ये सूराख आभूषण छुपाने के लिए भी इस्तेमाल किए जाते थे।

अपने सुपुत्र औरंगजेब द्वारा अपदस्थ किए जाने के बाद, शाहजहां आगरा के किले में बंदी था। यहां से वह शानदार ताजमहल को देख सकता था, जो उसे प्रिय मुमताज महल की याद दिलाता था। चित्र में आप मंडप के पीछे, एक भव्य बाग देख सकते हैं। इस अंगूरों के बाग या अंगूरी बाग को उसके छतों पर किए गए उत्कीर्णन के लिए जाना जाता है। इस उत्कृष्ट बाग के लिए मिट्टी कश्मीर से मंगवाई गई थी।

9. Khas Mahal Pavillion, Agra Fort, Agra, Uttar Pradesh

The Khas Mahal of the Agra Fort is flanked by two pavillions. The roofs of these pavillions are similar to the huts found in the eastern part of the country. Built on the design of palanquins, the roofs of these pavillions were covered with gilded copper plates. These were used as ladies bedrooms and had deep holes in the walls which were also used for concealing jewellery.

After being deposed by his son Aurangzeb, Shahjahan was imprisioned in the Agra Fort. From here he could see the majestic Taj Mahal which reminded him of his beloved Mumtaz Mahal.

Beyond the pavillion one sees the magnificent Garden of Grapes or the Anguri Bagh, named for the carving on its cloisters. Soil was brought from Kashmir for this exquisite garden.

10. खास महल, आगरा का किला, आगरा, उत्तर प्रदेश

सन् 1636 में शाहजहाँ ने इस खूबसूरत भवन को पुन: अभिकल्पित किया। कहा जाता है कि जहाँआरा बेगम यहाँ पूरे शाही-आराम के साथ रही थीं। यह पश्चिमाभिमुखी भवन संगमरमर से निर्मित है। इस महल के दक्षिणी-पूर्वी किनारे में जल-घर या बावड़ी है।

यह भवन दिल्ली स्थित लालकिले के दीवान-ए-खास का पूर्वगामी भी कहा जाता है। खास महल के सामने का बड़ा उद्यान ''अंगूरी बाग'' कहलाता है। इस भवन के तीन तरफ आच्छादित मार्ग है और मध्य में एक चबूतरा। पत्थर के बने इस मंच के चारों तरफ ज्यामितीय डिजाइनों में फूल बिछाए जाते थे। सन् 1895 में इस महल की जीर्णोद्धार किया गया।

10. Khas Mahal, Agra Fort, Agra, Uttar Pradesh

This beautiful hall was redesigned by Shahjahan in 1636 A.D. Jahanara Begum is said to have lived here enjoying all the royal comforts. The building is made out of marble and faces west. There is a well-house or *Baoli* in the south east corner of the Khas Mahal.

The building is the precursor of the Diwan-i-Khas built at Red Fort, Delhi.

The large garden facing the Khas Mahal is the Anguri Bagh (Garden of Grapes). It has arcades on three sides and a platform in the centre. The flowerbeds with geometric designs were laid out on all the four sides of the central stone platform. The hall was restored in 1895 A.D.

11. मुस्समन बुर्ज, आंतरिक भाग, आगरा का किला, आगरा, उत्तर प्रदेश

अकबर और उसके पोते शाहजहाँ ने भारतीय भवन-निर्माण-कला को काफी प्रभावित किया। उन्होंने अनेक खूबसूरत ऐतिहासिक भवनों, मजबूत किलों और महीन नक्काशी वाले भवनों को बनवाया। औरंगज़ेब और जहाँगीर आदि अन्य मुग़ल बादशाहों ने भी इस परंपरा में योगदान दिया। भवनों के डिजाइन की छोटी-छोटी बारीकियों पर भी विशेष ध्यान दिया जाता था।

चित्र में दर्शाया भवन, खास महल के पार्श्व में है और इसी में औरंगज़ेब ने अपने पिता शाहजहाँ को कैद कर के रखा था। यहीं से शाहजहाँ, ताजमहल के निर्माण-कार्य का निरीक्षण किया करते थे।

इसी चित्र में आप अनियमित रूप से अष्टकोणीय खिले कमल के मध्य फव्वारे को भी देख रहे हैं। दीवारों में बने छोटे-छोटे आले रोशनी के पात्र रखने के काम में आते थे। इसी प्रकार खास महल के पार्श्व वाले इस भवन के स्तंभों व दीवारों पर किया जड़ाऊ काम भी दृष्टिगोचर हो रहा है।

11. Mussaman Burj, interior view, Agra Fort, Agra, Uttar Pradesh

Akbar and his grandson Shahjahan have left their mark on Indian architecture. They built monuments of great beauty, some strong fortified structures and others delicately carved. Other Mughal Emperors like Aurangzeb and Jahangir also contributed to building activities. Great attention was paid to the minutest details of design, the floor, pillars, walls and ceilings were carved and decorated with inlay work.

The building shown in the picture is adjacent to the Khas Mahal. Shahjahan used to watch the construction of theTaj from this place while he was imprisoned by his son, Aurangzeb.

In the picture one sees, a fountain designed in the centre of an irregular lotus flower. The small alcoves on the walls were used to keep lamps at night.

12. बुलंद दरवाजा, फतेहपुर सीकरी, उत्तर प्रदेश

अकबर ने अपनी दक्कन की विजय से लौटने के पश्चात् विजय-स्मृति में एक मेहराबदार बुलंद दरवाजे का निर्माण करवाया। यह दरवाजा बड़ी ही भव्य इमारत है और इसकी ऊंचाई 76 फीट है। बुलंद दरवाजा अकबर द्वारा बनाई गई सबसे ऊंची इमारत है। लाल बलुवा पत्थर और संगमरमर से निर्मित यह दरवाजा दक्षिणाभिमुखी है और विशाल प्रांगण में खुलता है। इसका निर्माण सन् 1576 में पूर्ण हुआ। दरवाजे के पिछले हिस्से पर राजगिरी का खूबसूरत काम है तथा जामा मस्जिद की प्रांगण की मेहराबों एवं स्तंभों के माध्यम से सुंदर सौहार्द पैदा किया गया है।

12. Buland Darwaza, Fatehpur Sikri, Uttar Pradesh

Akbar on his return from his victorious campaign in the Deccan, built the arched Buland Darwaza or 'Gate of Magnificence'. This *darwaza* or gateway is a most imposing structure which rises to a height of about seventy-six feet and is the highest building built by Akbar.The gateway faces south, opens up in a vast courtyard and is built of red sandstone and marble. The gateway was completed in 1576 A.D. The rear portion of this gateway has fine masonry work and establishes harmony with the arches and colonnades of the *Jami Masjid* in the courtyard.

13. शेख सलीम चिश्ती की मज़ार, फतेहपुर सीकरी, उत्तर प्रदेश

अकबर के शासन संभालने के समय ही मुगल-साम्राज्य लगभग स्थापित हुआ था। अकबर चूंकि संतानहीन था, इस कारण सूफी संत शेख सलीम चिश्ती का आशीर्वाद लेने सीकरी आया। तत्पश्चात् अकबर के तीन बेटे हुए। बड़े लड़के का नाम संत शेख सलीम के नाम पर मोहम्मद सलीम रखा गया।

जामा मस्जिद के प्रांगण में शेख सलीम चिश्ती की सुंदर मजार स्थित है। इस संत की छोटे से रत्न जैसी मज़ार की वास्तु निर्माण कला की विशेषता– संगमरमर की सूक्ष्म सुंदर जालियां हैं, जिन पर ज्यामितीय ढंग की नक्काशी की गई हैं।

इस पूरे परिसर में केवल मजार ही श्वेत संगमरमर से निर्मित है। मूलत: लाल बलुवा पत्थर से बनी इस मजार को संभवत: जहाँगीर या शाहजहाँ के शासन-काल की शुरूआत में श्वेत संगमरमर से दुबारा बनवाया गया।

आने वाले पर्यटक शेख साहब की मज़ार पर दुआएं मांगते हैं। वे इसके दरवाजे पर धागा बांध कर मन्नत मनाते हैं कि उनके द्वारा वांछित इच्छा पूरी होने पर वे फिर मज़ार पर आएंगे।

13. Sheikh Salim Chisti's Tomb, Fatehpur Sikri, Uttar Pradesh

The Mughal rule was more or less established when Akbar took over as the emperor. As he had no children, he was worried about his successor and visited the Sufi Saint Sheikh Salim Chisti for his blessings. Three sons were born to Akbar and the eldest son was named Mohammed Salim after Sheikh Salim Chisti.

The tomb of Sheikh Salim Chisti is situated in the courtyard of Jami Masjid. The exquisite marble screens, carved in duplicate geometric patterns are some important architectural features of this small jewel-like tomb of the saint. At the tomb, the inside inlay work using different kinds of stones and lapis lazuli provides a brilliant contrast to the marble.

The tomb is the only building which is made out of white marble in the entire complex. The original structure in red sandstone was changed to white marble either during Jahangir's or early period of Shahjahan's reign.

Visitors to this tomb pray to the Saint for his blessings. They tie threads on the doorway with a promise to return to the tomb after fulfilment of their desires.

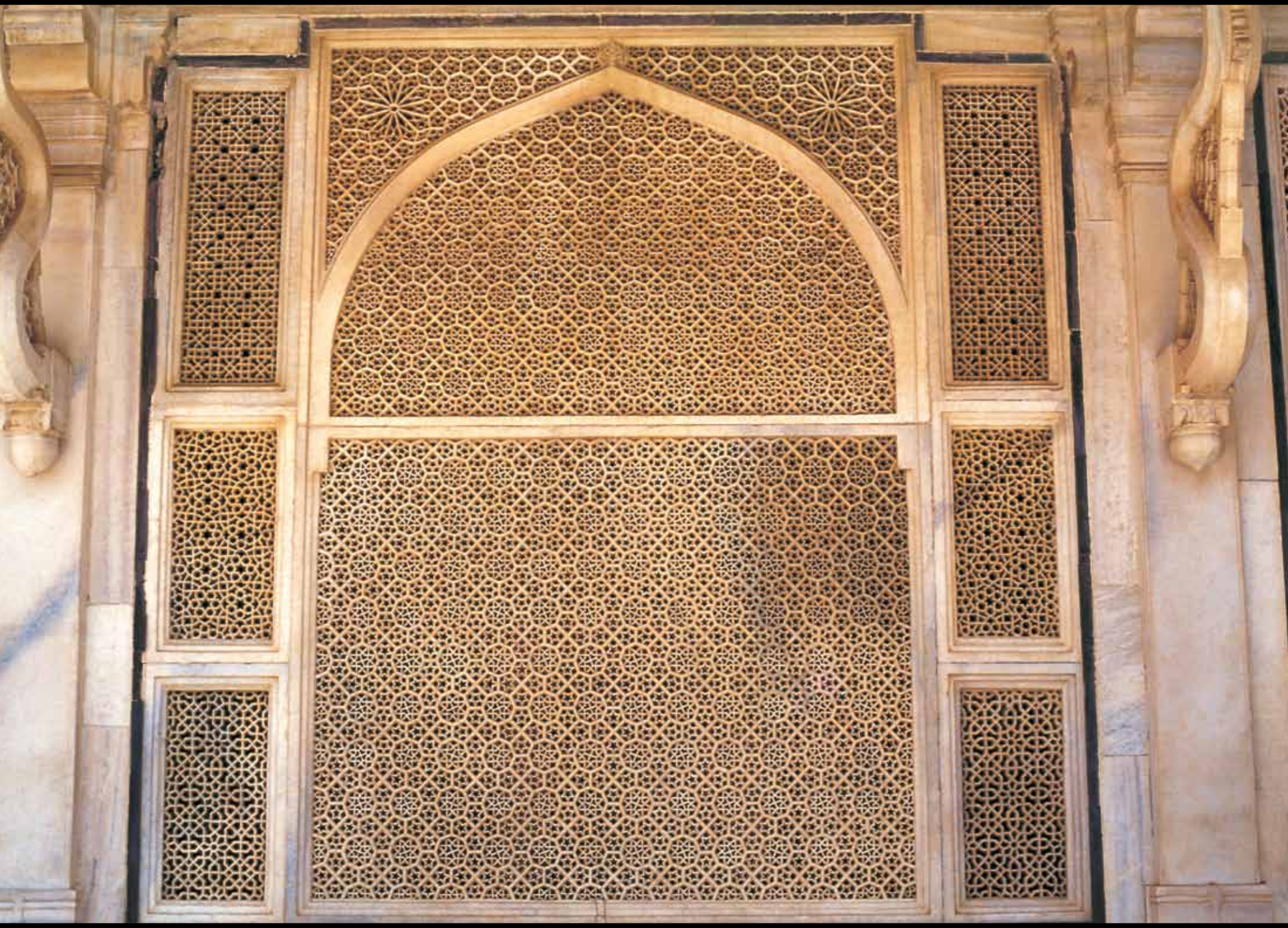

14. संगमरमर आवरण, सलीम चिश्ती का मक़बरा, फतेहपुर सीकरी, उत्तर प्रदेश

भारत-इस्लामी इमारतों में निहित वास्तुकलात्मक तत्वो और उनके अलंकरण हेतु चुनी गई सामग्री को, अक्सर प्रकाश और छाया द्वारा रूपांतरित करने और प्रतिबिंबित तथा अपवर्तित (डिजाईन) करने के लिए अभिकल्पित किया जाता है। अलंकरण, वास्तुकला के साथ निकट रूप से जुड़ा हुआ है। फतेहपुर सीकरी स्थित शेख सलीम चिश्ती के मक़बरे में इसका एक अति सूक्ष्म उदाहरण प्राप्त होता है, जहां पर मेहराबी आले की रूपरेखा अभिकल्पना का ही एक भाग है, ताकि संरचना अलंकरण और प्रतीकात्मकता निरंतर सुसंगत सम्मिश्रण को अभिव्यक्त कर सकें। विशुद्ध श्वेत संगमरमर से निर्मित ज्यामितीय अभिकल्पनाओं से युक्त उत्कृष्ट जालियाँ सुकून देती हैं और सुन्दर लगती हैं।

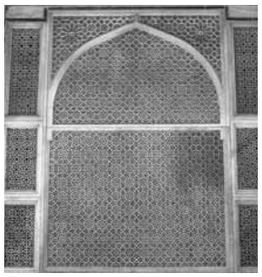

14. Marble Screen, Salim Chisti's Tomb, Fatehpur Sikri, Uttar Pradesh

Architectural elements in Indo–Islamic buildings and the materials chosen for their decoration are often designed so as to reflect, refract and be transformed by light and shade.

A particularly subtle example is found in the tomb of Sheikh Salim Chisti at Fatehpur Sikri, where the outline of a *mihrab* niche is part of the design so that structure, decoration and symbolism continued to produce an harmonious blend. The artisans dexterity in working in pure white marble can be seen in the geometric design of *jalis.*

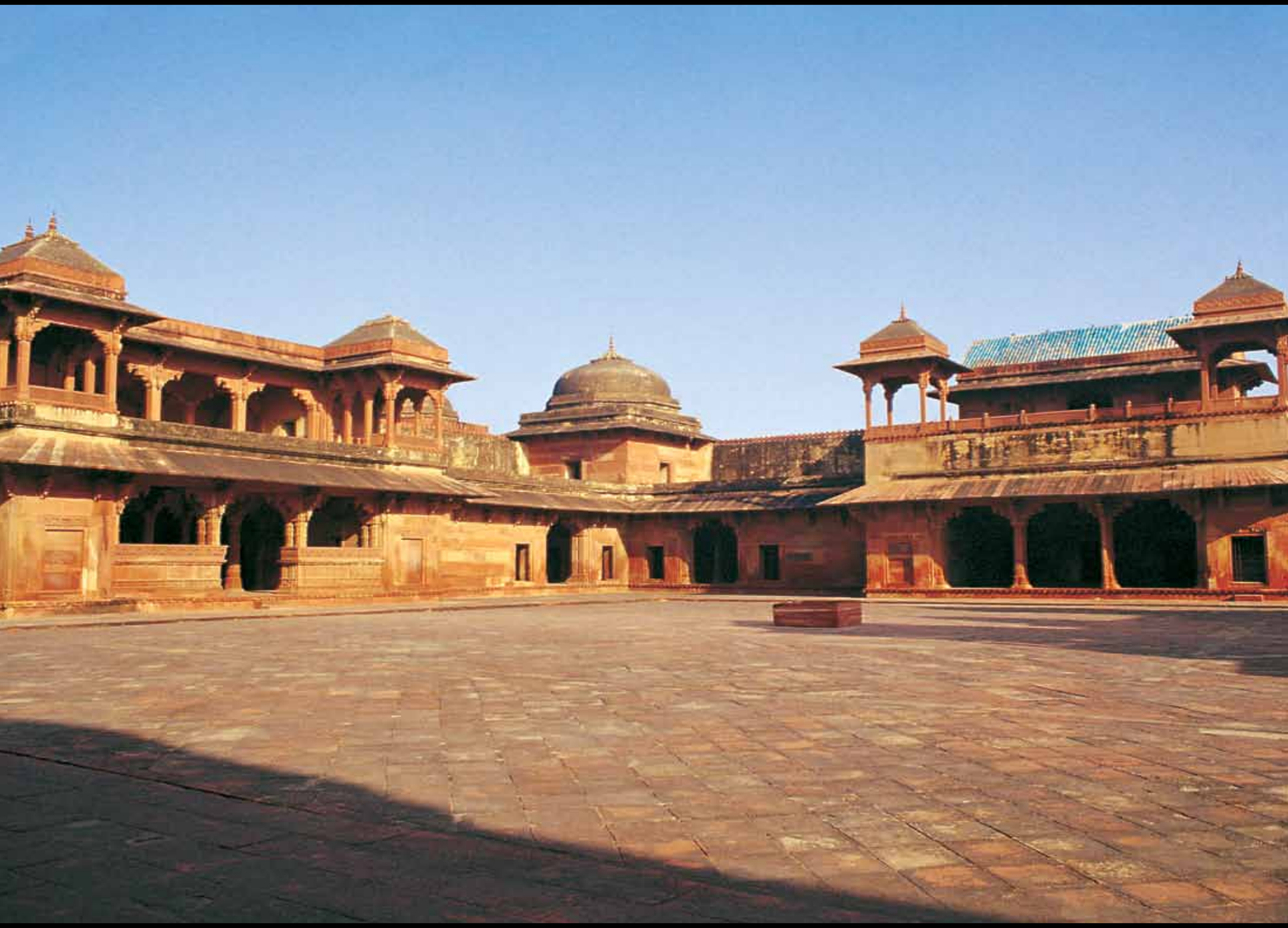

15. जोधाबाई का महल, फतेहपुर सीकरी, उत्तर प्रदेश

फतेहपुर सीकरी में आज जितने भी ऐतिहासिक भवन ज्यों के त्यों खड़े हैं उनके पीछे एक यह भी कारण है कि उनके निर्माण में रेतीला पत्थर या बलुआ पत्थर इस्तेमाल किया गया।

''शबिस्तान-ए-इक़बाल'' जिसे प्राय: जोधाबाई के महल के नाम से भी जाना जाता है, आवासीय और निजी भवन के मध्य में स्थित है। इसमें प्रवेश के लिए रखवाली चौकी में से होकर जाना पड़ता है। उस समय अंदर आने पर रानियों व उनकी सखियों का अपना ही राज होता था। अंदर कई भवन हैं, जो प्राय: दो मंज़िलें एवं खुली छत वाले हैं। महल का भवन हिंदू और इस्लामी वास्तुशैलियों के सुंदर मिश्रण का नमूना है। इसकी एक खास विशेषता यह है कि आयताकार छतों पर नीले रंग के चमकीला फारसी पत्थर का इस्तेमाल किया गया है।

15. Jodh Bai's Palace, Fatehpur Sikri, Uttar Pradesh

Sandstone has been used for the construction of different buildings at Fatehpur Sikri. Most of the buildings are in a good state of preservation as this stone has stood up fairly well to the ravages of time.

The *Shabistan-i-Iqbal,* popularly known as Jodh Bai's palace occupies the centre of the residential and private complex. The entry in this palace is through a guarded gate-house. Once inside, the queens and their companions were in a world of their own. The interior consists of a range of buildings which are mostly two-storeyed with open terraces. The palace buildings are a pleasing blend of Hindu and Islamic style of architecture. The most striking external feature is the use of Persian blue glazed tiles on the rectangular roofs.

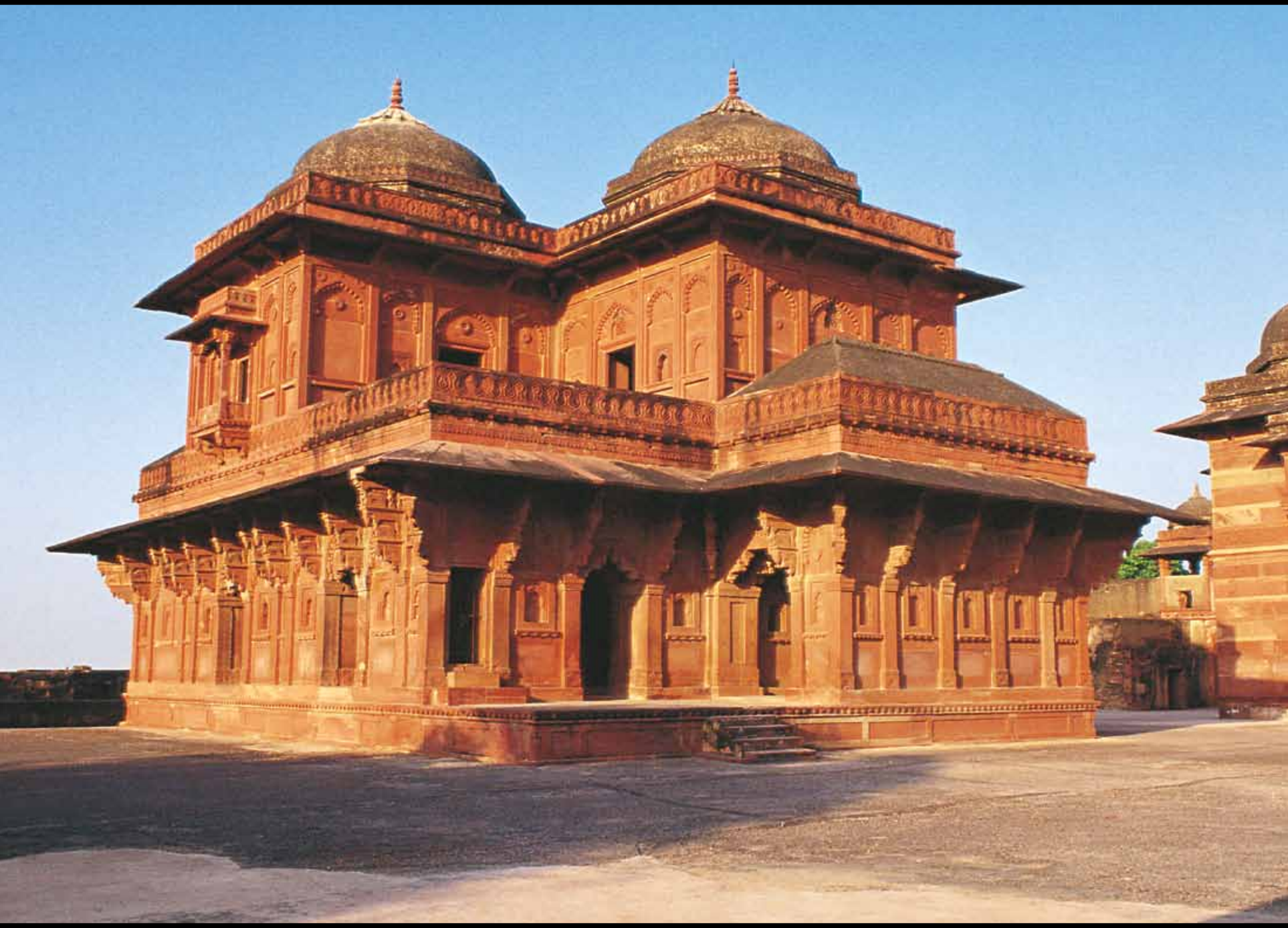

16. बीरबल निवास, फतेहपुर सीकरी, उत्तर प्रदेश

यह राजसी परिसर के उत्तर-पश्चिमी कोने में स्थित, हाथी-द्वार और नीचे स्थित मैदानों से ऊंची एक इमारत है। इस इमारत की पूर्णतः उत्तम दर्जे के लाल बलुआ पत्थर से बनी दो मंज़िलें हैं। निचली मंज़िल में उत्तर और दक्षिण की ओर आयताकार प्रवेश द्वारमण्डप और खुले द्वारमार्गों से अन्तः सम्बद्ध चार वर्गाकार कक्ष हैं।

पहली मंजिल पर केवल दो कक्ष हैं और प्रत्येक की गुम्बद-युक्त छत है।

स्तम्भों और कोष्ठकों सहित बाह्य भाग पर किया गया उत्कीर्णन कुशल कारीगरी का उत्कृष्टतम उदाहरण है। अलंकरण में ज्यामितीय और सूक्ष्म पुष्प अभिकल्पनाएं (डिज़ाईन) तथा असंख्य रूपों को देखा जा सकता है। हालांकि, इस स्थान को 'बीरबल' का घर कहना उचित नहीं है, क्योंकि वह यहाँ निवास नहीं करता था। इस इमारत की सर्वाधिक संभावित अधिभोक्ता अकबर की दो बड़ी रानियां-रुक़ैया बेगम और सलीमा सुलतान बेगम थीं।

16. Birbal's House, Fatehpur Sikri, Uttar Pradesh

Built in 1572 A.D. this building is situated at the north-west corner of the Royal Complex, overlooking the Elephant Gate and the plains below.

It has two storeys made entirely of red sandstone of the finest quality. The ground floor has four square rooms, all inter-connected through open doorways and oblong entrance porches on the North and South sides. The first floor has only two rooms, each with a domed ceiling.

The carvings on the exterior, including pillars and brackets, are excellent examples of workmanship. Geometric and stylised floral designs, in a myriad variety can be seen in the ornamentation.

However, the name 'Birbal's House' is a misnomer as he did not live there. It was probably occupied by Akbar's two senior queens, Ruqayya Begum and Salima Sultan Begum.

17. सिटी पैलेस का मध्य भाग, फतेहपुर सीकरी, आगरा, उत्तर प्रदेश

इस्लामी परंपराओं का पालन करते हुए तत्कालीन मुख्य शहर फतेहपुर सीकरी के शाही भवन भी परस्पर मिले रहते थे, इसके बावजूद हर भवन का अपना अलग रूप व कार्य था।

इस चित्र के अग्रभाग में हमें अनूप तालाब दिखाई दे रहा है। बायीं तरफ पंच महल है और दायीं तरफ दीवान-ए-ख़ास। जब बादशाह अकबर अनूप तालाब के पास से होकर गुज़रते थे तो नक्कार खाने में बैठे संगीतकार संगीत बजाया करते थे। विशेष समारोहों के अवसरों पर खाली प्रांगण में एक अच्छी भीड़ एकत्रित होती थी।

इसी के मध्य में दो मंज़िला दीवान-ए-ख़ास भी स्थित है। इसका बाहरी हिस्सा सादा है, जबकि आंतरिक भाग सुसज्ज़ित। बादशाह अकबर जिस गोलाकार मंच पर बैठकर चर्चा में भाग लेते थे, वह एक स्तंभ पर आधारित है। यही इस भवन की वास्तुकला की एक खास विशेषता है।

17. Core Complex, City Palace, Fatehpur Sikri, Agra, Uttar Pradesh

In keeping with the Islamic tradition, the imperial buildings in the capital city of Fatehpur Sikri were closely interrelated but each building has a distinct style and function.

In this picture, one sees the Anup Talao(Peerless Pool) in the foreground, Panch Mahal on the left hand corner and Diwan-i-Khas on the right. In the Naqqar Khana, musicians heralded the arrival of Akbar as he went along the passages past Anup Talao. The courtyard around Anup Talao accommodated large gatherings on special occasions.

The Diwan-i-Khas is a two-storeyed building in the centre of the courtyard. The external area is simple whereas the interior is elaborately designed. The principal architectural feature is a solitary pillar in the centre supporting a circular stone platform on which the Emperor Akbar sat while giving audience.

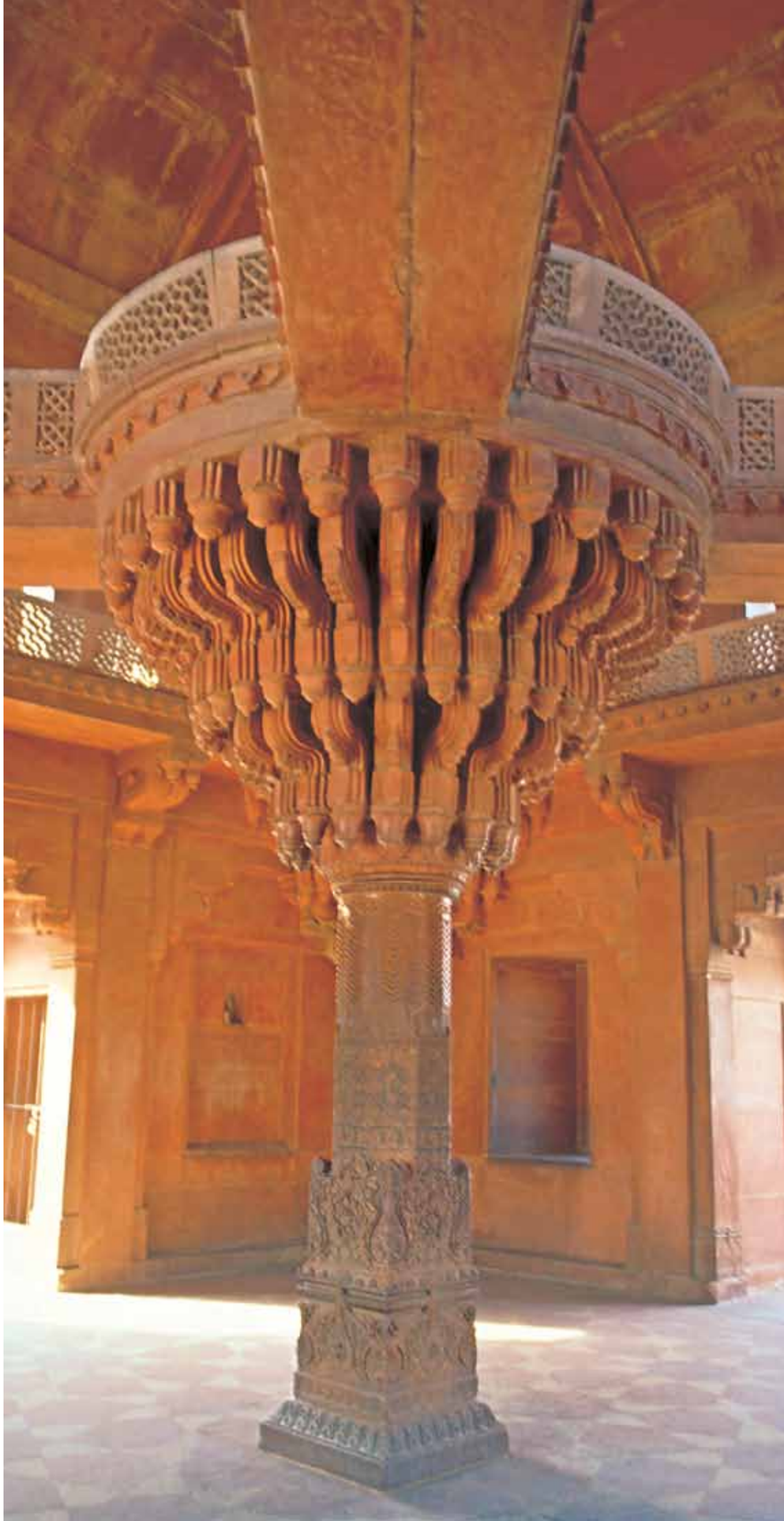

18. पंच महल और दीवान-ए-खास का आंतरिक भाग, फतेहपुर सीकरी, उत्तर प्रदेश

पंच महल

महल परिसर का सबसे ऊंचा भवन पंच महल है। यह शाही हरम और पचीसी अदालत के मध्य स्थित है। यह एक पाँच मंजिला भवन है। 'पंच' भी पाँच का पर्यायवाची है, इसीलिए नाम पड़ा पंच-महल। भूतल भवन के ऊपर की मंज़िलें तथा सभी स्तंभ असमान हैं भवन में हिंदू प्रतीक-चिह्नों का भी उपयोग किया गया है। वैसे तो भवन की मूल कल्पना फ़ारसी शैली की है, पर इसका निर्माण भारतीय शैली में हुआ है। ऐसी मान्यता है कि बादशाह अकबर अपनी रानियों के साथ इस खुले भवन में बैठकर प्राकृतिक सुंदरता और चारों ओर से आती ठंडी ताजा हवा का भी आनंद लिया करते थे।

दीवान-ए-खास का आंतरिक भाग

यह अकेला तराशा गया स्तंभ धरातल में चौकोर है। फिर ऊँचा उठने पर अष्टकोणीय है और अंत में सोलहकोणीय। मध्य में छत्तीस दीवारगीर एक गोलाकार मंच को सहारा दे रही हैं। इस मंच की दीवारों के बराबर बने गलियारों को पत्थर से निर्मित चार तिरछे पुलों से जोड़ा गया है।

इस खूबसूरत निर्माण का उद्देश्य ज्ञात नहीं हो सका है। संभवत: यह गुप्त वार्तालाप, प्रवचन या शाही मेहमानों से मिलने के लिए इस्तेमाल किया जाता होगा।

18. Panch Mahal and Interior of Diwan-i-Khas, Fatehpur Sikri, Uttar Pradesh

Panch Mahal

The Panch Mahal is the tallest building in the palace complex and is located between the imperial harem and the Pachisi Court. It is a five storeyed building. The word *"panch'* denotes five, hence, it is known as the Panch Mahal. Each succeeding tower above the ground floor is placed asymetrically and no two columns are exactly alike. The motifs used in the building are mostly Hindu. The building is Persian in concept but the execution is entirely Indian. It is believed that Akbar, along with his queens, sat in this oepn building to enjoy the view of the landscape and the cool breeze coming in from all directions.

Interior of Diwan-i-Khas (Central Pillar)

This solitary elaborately carved stone capital is square at the base, then octagonal and finally sixteen-sided in the centre with thirty-six brackets supporting a circular stone platform. From this platform, four stone bridges diagonally connect with galleries running along the walls.

The actual purpose of this beautiful structure is not known. It might have been used for private discussions, religious discourses or meeting with dignitaries.

विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत
World Cultural Heritage Sites-India
1

19. ताजमहल, आगरा, उत्तर प्रदेश

भारत के मुगल निर्माण काल में शाहजहाँ का समय स्वर्ण काल माना जाता है। शाहजहाँ के पूर्वजों ने भवन-निर्माण में बलुवा पत्थर इस्तेमाल किया था। परन्तु शाहजहाँ ने इसकी तुलना में संगमरमर को प्राथमिकता दी।

विश्व के सात आश्चर्यों में से ताजमहल भी एक है और यह अपने संतुलित डिज़ाइन के लिए जाना जाता है। इस मक़बरे का हर हिस्सा-चाहे वह गुंबद हो या छतरियाँ या फिर मीनारें, बाग और सजावट, सभी मिलकर एक सुंदर एवं पूर्ण सामंजस्य स्थापित करते हैं। ताज वैसे तो यमुना के किनारे स्थित था, पर कालांतर में यमुना नदी अपने स्थान से अपना मार्ग बदलते हुए अब ताज से थोड़ा हटकर बहती है।

मुख्य मकबरा एक ऊँचे चबूतरे पर स्थित है तथा इसके हर कोने में एक मीनार है। इन मीनारों की डिज़ाइन कुछ इस प्रकार की है कि इनका झुकाव थोड़ा-सा बाहर की तरफ है। ऐसा इसलिए किया गया है कि अगर कभी ये गिरें भी तो बाहर की तरफ गिरें, मुख्य मक़बरे पर नहीं। चार-बाग़ शैली में बना बाग़, लॉन और फव्वारों से सुव्यवस्थित है। बाग के मध्य में संगमरमर का जल-कुंड भी है।

दाहिनी तरफ पेड़ों के पीछे इस मक़बरे का पूर्वी दरवाज़ा दृष्टिगत है।

19. Taj Mahal, Agra, Uttar Pradesh

The period of Shahjahan is known as the golden period of Mughal architecture in India. Shahjahan preferred marble to sandstone which was largely used by his predecessors.

The Taj Mahal, one of the seven wonders of the world, is known for its symmetry of design. Every part of this mausoleum—the dome, cupolas, minarets, garden and decoration present a perfect harmony. The Taj Mahal was situated on the banks of the river Yamuna, which has since shifted some distance away over the centuries.

The main mausoleum is standing on a marble platform with four minarets in each corner. These minarets have been designed with a slight outward tilt, so that, if they ever collapsed they would fall away from the main building. The garden, designed on the Char Bagh pattern has well laid out lawns and water fountains. A marble tank in the centre of the garden is also seen.

On the right, behind the trees, one sees the eastern gateway of the mausoleum.

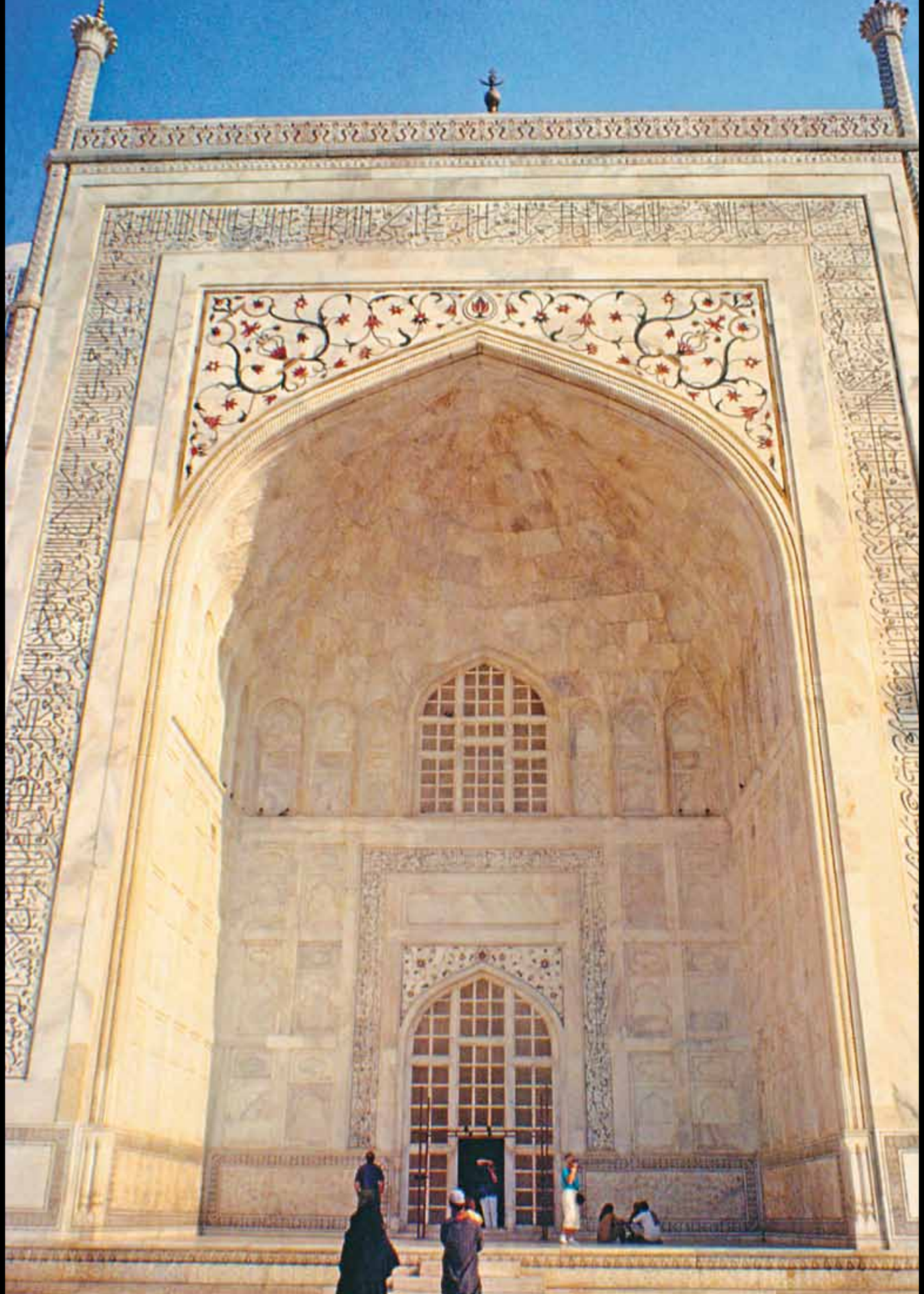

20. दक्षिणी मेहराब का आला और प्रवेश-द्वार, ताजमहल, आगरा, उत्तर प्रदेश

ताजमहल की शान और उसकी भव्यता उसके आसपास ही हर वस्तु की चमक को फीका कर देती है। जैसे ही आप मकबरे के नजदीक पहुंचते हैं तो इसके भवन-निर्माण कला के आयामों का प्रत्यक्ष ज्ञान मन मोह कर इसके विभिन्न भागों की संपूर्णता का अहसास दिलाता है।

चित्र में आप इसके जिस अत्यधिक सुंदर प्रवेश-द्वार को देख रहे हैं, वहां संकरी सीढ़ियों से होकर जाया जाता है।

मुस्लिम भवन-निर्माण-कला की एक मूल विशेषता सुलेख भी है। आलों, दरवाज़ों के ऊपर, मीनारों पर, गुंबद के अंदर और बाहर, यहां तक कि हर जगह, ऐसा लगता है, मानों खाली स्थान का उपयोग सजावट और धार्मिक आयतों के प्रदर्शन के लिये किया गया है।

गुंबद की पूर्व, पश्चिम और उत्तर की दिशाओं में प्रवेश-द्वार को छोड़कर इसी प्रकार के मेहराब एवं फलक हैं।

20. Recess of South arch and entrance door, Taj Mahal, Agra, Uttar Pradesh

The grandeur and magnificence of the Taj Mahal dwarfs everything around it. As the tomb is approached, the architectural perception of its dimensions fascinates and creates an awareness of the perfection of its proportions.

The supremely beautiful entrance to the tomb as is seen in the picture, is approached through a narrow staircase. The flooring design in the spandrels have been made in pietra dura inlay. The design of the vertically paired recesses on either side of the *aiwan* are treated likewise.

Calligraphic inscriptions had been a primary characteristic of Islamic architecture. It appears in niches, above doorways, on minarets, inside and outside of domes, recesses; practically everywhere, serving the purpose of displaying scriptural verses and decorative use of space.

The east, west and north sides of the tomb have similar facades but without the entrance doorway.

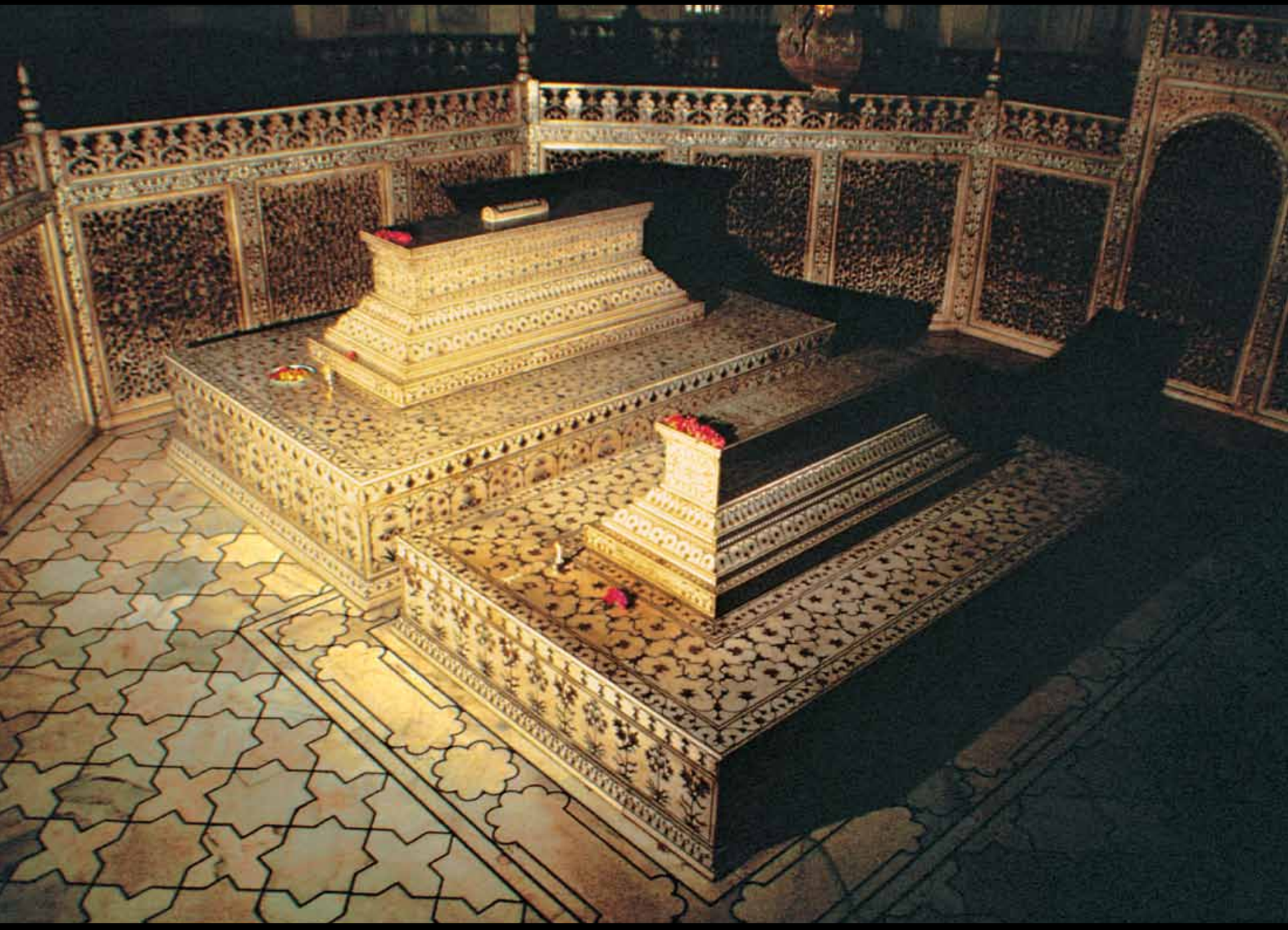

21. मुमताज़ महल और शाहजहां का स्मारक, ताजमहल, आगरा, उत्तर प्रदेश

ताजमहल वास्तव में एक गमगीन पति, बादशाह शाहजहाँ द्वारा अपनी पत्नी मुमताज की याद में बनवाया गया स्मारक है। शाहजहाँ को भी उनकी प्रिय बेगम की बगल में दफ़नाया गया। आप साथ-साथ बने दो सुसज्जित मकबरों को देख सकते हैं। ताजमहल के मध्य में एक अष्टकोणीय बड़ा हॉल है। इसी में ये दोनों मक़बरे स्थित हैं। मक़बरों की आंतरिक व्यवस्था फ़ारसी शैली की है। मूल शव-गृह धरातल पर है और इसी ढंग से ठीक इसके ऊपर मुमताज महल का स्मारक है। शाहजहाँ का स्मारक इसकी बगल में है। संगमरमर के मकबरे और साथ ही बनी सुंदर जाली स्वयं में कला के महान नमूने हैं।

मुमताज महल के स्मारक पर अंकित है– ''अर्जुमंद बानू बेगम, जिसे मुमताज महल कहते थे, की कब्र। इंतकालः ए.एच. 1040 (1630 ई.)''

21. Mumtaz Mahal's and Shahjahan's cenotaph, Taj Mahal, Agra, Uttar Pradesh

The Taj Mahal was a memorial for Mumtaz Mahal built by her grieving husband, the emperor Shahjahan. He was buried next to his beloved empress. You can see the two highly decorated tombs set side by side. In the central chamber of the Taj Mahal, which is octagonal in shape, rest the tombs of Mumtaz Mahal and Shahjahan. the internal arrangement of the tomb is Persian in plan. The mortuary chamber is at the ground level and the cenotaphs have been placed in identical position directly above, Mumtaz Mahal in the centre and Shahjahan on the side. The marble tombs with their pietra dura work, and the screen are great works of art in themselves.

The inscription of Mumtaz's cenotaph reads, "The illustrious sepulcher of Arjumand Banu Begum called Mumtaz Mahal. Died in A.H. 1040 (AD 1630)."

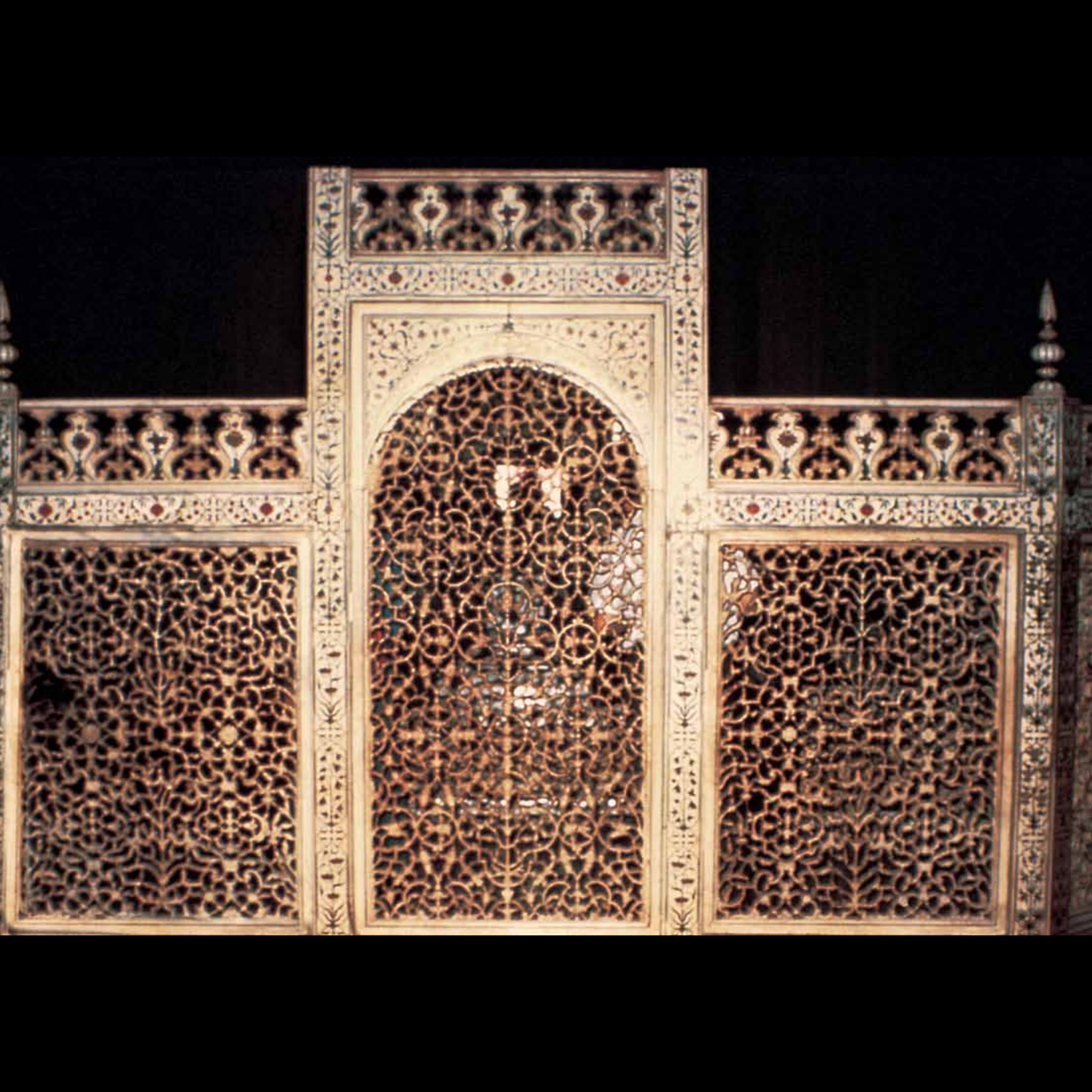

22. संगमरमर की जाली, ताजमहल, आगरा, उत्तर प्रदेश

ताजमहल को उर्स अर्थात् तीर्थस्थल और धर्मस्थल के रूप में भी माना जाता है। केंद्रीय कक्ष का आंतरिक हिस्सा दूधिया शीशों से बना है। इस कारण इसे ''आइना महल'' के नाम से भी जाना जाता है।

''आइना महल'' में पर्देदार संगमरमर के ऐसे इकहरे टुकड़े हैं जो कि संगमरमर के ही ढाँचों में लगाए गए हैं। इन्हें पित्रा ड्यूरा शैली में बेहतरीन ढंग से सजाया गया है। इसी कारण केवल इस जाली के निर्माण में ही लगभग दस वर्ष लगे। यह कलात्मक जाली स्मारकों के चारों तरफ अष्टकोणीय डिजाइन बनाती है। कक्ष में धीमा प्रकाश और ध्वनि की गूंज जादुई प्रभाव पैदा करती है।

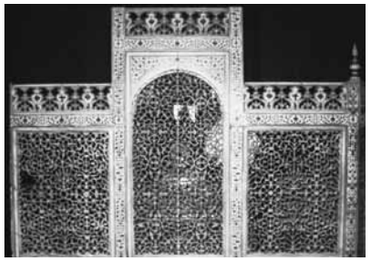

22. Marble Screen, Taj Mahal, Agra, Uttar Pradesh

The Taj Mahal is also regarded as an *urs,* a place of pilgrimage and religious observance. The interior of the central chamber is filled with milky glass and is known as Aina Mahal or Glass Palace.

The Aina Mahal's screen consists of single pieces of fretted marble, set in marble frames. The screen is decorated with fantastically designed pietra dura inlay, which took almost ten years to build. This masterpiece forms an octagon around the cenotaphs.

The subdued light and the resonance of sound inside the hall creates a magical effect.

23. पित्रा ड्यूरा और नक्काशी, ताजमहल, आगरा, उत्तर प्रदेश

भारत में पन्द्रहवीं शताब्दी से ही नर्म पत्थरों पर जड़ाऊ कार्य और बलुआ पत्थरों पर संगमरमर की नक्काशी का कार्य होता रहा है। मुगल बादशाह जहाँगीर ने इस कला को प्रश्रय दिया और अधिकाधिक उपयोग करवाया। स्वयं जहाँगीर का अपना मक़बरा, जो कि उनकी बेगम नूरजहाँ ने लाहौर में बनवाया था, उस पर भी इस कला का बेहतरीन उपयोग हुआ है।

शाहजहाँ ने आगरा के किले और ताजमहल में जो भवन या हिस्से फिर से बनवाए, उनमें इस कला का सजावट के तौर पर उपयोग हुआ है और उसने श्वेत संगमरमर की शुद्धता को दोगुना कर दिया। सन् 1640 के दौरान जब कारीगर ताजमहल में कार्य कर रहे थे तो यह कला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंची। शाहजहाँ ने इटली आदि के विदेशी कारीगरों द्वारा निर्मित इस शैली की कलाकृतियाँ भी खरीदीं।

माना जाता है कि पित्रा ड्यूरा की यह कला मेडिसी फ्लोरेंस और भारत के मुगल शासन-काल में साथ-साथ विकसित हुई।

23. Pietra dura detail and low relief carving, Taj Mahal, Agra, Uttar Pradesh

Inlay work on soft stone and marble carving in sandstone setting had been known in India from the 15th century. Mughal emperor Jahangir patronized and used this art extensively. His own tomb at Lahore, built by his empress Noorjahan has lavish display of Jahangir's favourite motifs in pietra dura work.

In the buildings redesigned by Shahjahan in Agra Fort and the Taj, pietra dura is used for decoration and to enhance the white purity of the marble. The art reached its zenith when the artists were working on the Taj during the 1640s. Shahjahan also bought ready made art objects of pietra dura work from Italian and other artists.

It is believed that the art of pietra dura flowered in Medici Florence and the Mughal court in India during the same period.

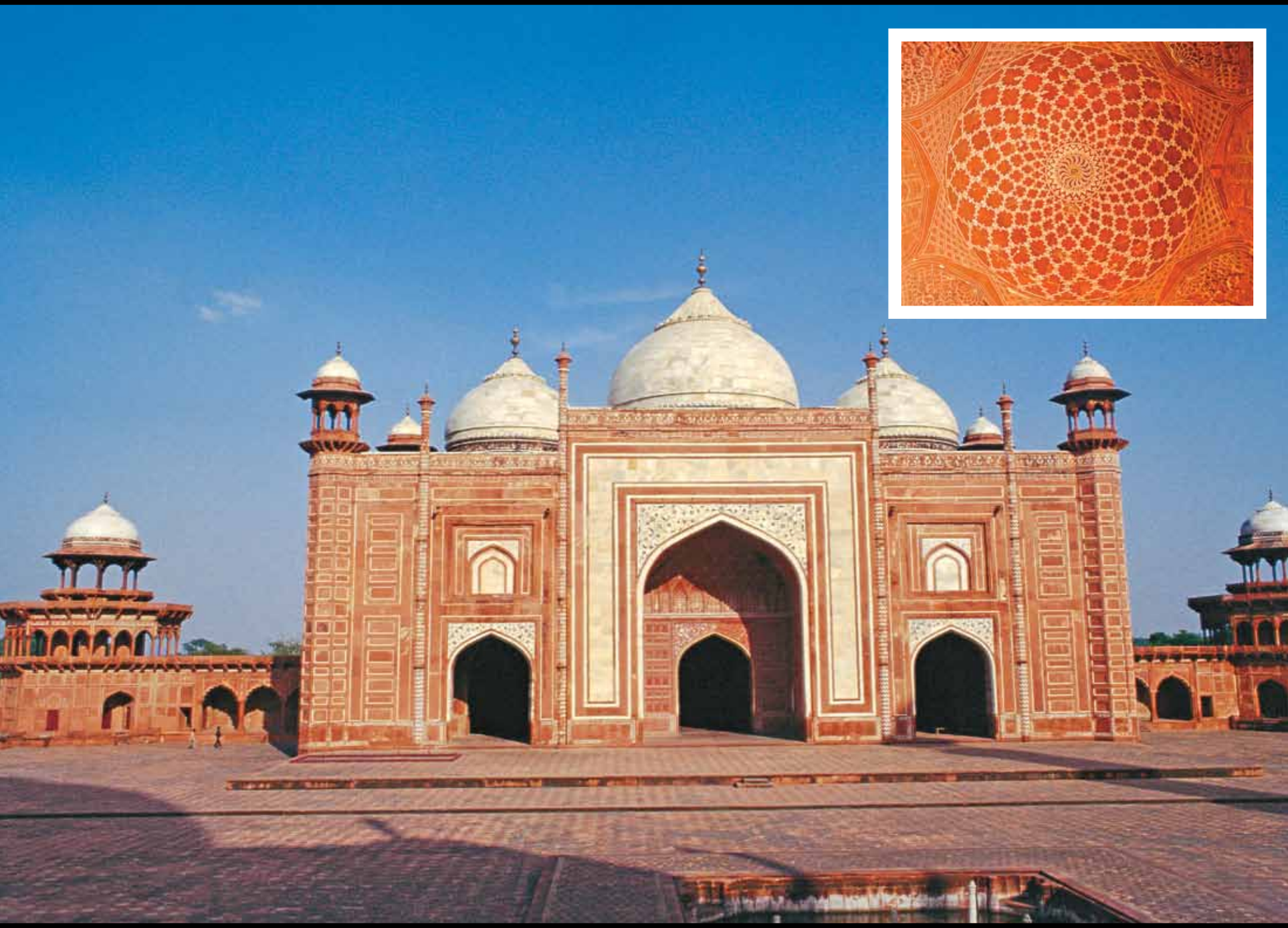

24. जामा मस्जिद, ताज परिसर, आगरा, उत्तर प्रदेश

प्रस्तुत चित्र में ताज के पश्चिम में स्थित एक मस्जिद दिखाई गई है। लाल पत्थर से बनी यह मस्जिद तीन गुम्बदों से आच्छादित और तीन मेहराबी द्वारों से युक्त है। इनका बाह्य भाग श्वेत संगमरमर और आन्तरिक भाग लाल पत्थर से निर्मित है।

मस्जिद के आगे की ओर, एक ऊंचा उठा हुआ चबूतरा है, जिसकी 70 हाथ (क्यूबिट) लंबाई और 20 हाथ चौड़ाई है। स्तम्भपीठ के चारों कोनों पर चार तीन मंजिली अष्ट भुजाकार बुर्ज स्थित हैं, जिनके गुम्बद मस्जिद के ही समान हैं। मध्य में स्थित गुम्बद (आन्तरिक चित्र) की छत की भव्य संरचना है, जो वास्तुकला तथा अभिकल्पना में नवीन संकल्पनाओं की रचना करने के प्रति, शिल्पकारों और भवन निर्माताओं की इच्छा को प्रदर्शित करती है।

24. Jama Masjid, Taj Complex, Agra, Uttar Pradesh

This picture shows the mosque on the west side of the Taj. It is built of red stone and is provided with three arched openings and surmounted by three domes, all of which are of red stone within and of white marble outside.

In front of the mosque, there is a raised terrace, *chabutara,* which is 70 cubits in length and 20 cubits in width. At the four corners of the plinth are situated four three-storeyed octagonal towers *(burj)* which have domes similar to that of the mosque.

The ceiling of the central dome (inset) is a magnificent structure and shows the desire of the builders and artisans to create new concepts of design in architecture.